# द्वितीय वर्ष
# (Second Year)

| कोड | विषय | Credit | बाह्य परीक्षा | आन्तरिक |
|---|---|---|---|---|
| S-1 | समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा | 4 | 70 | 30 |
| S-2 | संज्ञान, सीखना और बाल विकास | 4 | 70 | 30 |
| S-3 | कार्य और शिक्षा | 2 | - | 50 |
| S-4 | स्वयं की समझ | 2 | 35 | 15 |
| S-5 | विद्यालय में स्वास्थ्य, योग एवं शारीरिक शिक्षा | 4 | 40 | 60 |
| S-6 | Pedagogy of English (Primary Level) | 2 | 35 | 15 |
| S-7 | गणित का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर) | 2 | 35 | 15 |
| S-8 | हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर) | 2 | 35 | 15 |
| S-9 | उच्च–प्राथमिक स्तर (कक्षा 6–8) के किसी एक विषय का शिक्षणशास्त्र | 2 | 35 | 15 |
| SEP-2 | विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–2 (इंटर्नशिप) 16 सप्ताह | 16 | 100 | 300 |
| **द्वितीय वर्ष कुल अंक (1000)** | | **40** | **455** | **545** |

**सत्र के विभिन्न विषयपत्रों के अध्ययन में निम्नलिखित ई–संसाधनों का उपयोग अपेक्षित है :**

- विषयपत्रों की विषयवस्तु पर आधारित आई.सी.टी./ऑडियो–विजुअल/एनिमेशन सामग्री।
- प्रारम्भिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित डिजिटल सामग्री।
- विषयवस्तुओं से सम्बंधित फिल्म, डॉक्युमेंटरी, प्रेजेन्टेशन, वेब–रिसोर्स, ओपेन रिसोर्स, आदि।

**S-1**

# समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा

## संदर्भ

सामाजिक दृष्टिकोण से विद्यालय प्रारम्भिक स्तर के संस्थाओं का विस्तार है जो न केवल एक समाज विशेष में बच्चे एवं बचपन को गढ़ने में सक्रिय भूमिका निभाता है बल्कि यह स्वयं भी सामाजिक विमर्शों एवं संदर्भों से नियंत्रित भी होता है। इसी संदर्भ में यह समझना आवश्यक है कि समाज में व्याप्त असमानता तथा वंचना ने विद्यालय में दिये जानेवाली शिक्षा के समान अवसरों को किस प्रकार प्रभावित किया है। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से विद्यालय की अंतःक्रियात्मक प्रक्रिया में असमानता, वंचना तथा वर्चस्व जैसी विभेदीकृत गतिविधियाँ अंतर्निहित हैं जिनका बच्चों पर स्थायी प्रभाव पड़ता है। अतः यह जरूरी है कि विद्यालय में व्याप्त विषमता से निपटने के लिए समानता, समता, समावेशीकरण तथा सामाजिक न्याय पर आधारित नीतियों, कार्यक्रमों तथा प्रयासों की विशेष समझ प्रशिक्षुओं में हो। साथ ही संवैधानिक अंतर्दृष्टि, मूल्य, नीतिगत प्रावधान, राजनैतिक विमर्शों को भी इन संदर्भों में देखना आवश्यक है। जहाँ विद्यालय में व्यापत असमानता व वंचना के प्रति एक उदासीन दृष्टिकोण है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति तथा समाज निर्माण की अंतर्निहित क्षमता के कारण विद्यालय को एक संभावना के रूप में भी देखा जाता है। अतः विद्यालय को सामाजिक परिवर्तन तथा पुनर्निर्मित करने वाला संस्था के रूप में समझना अति महत्त्वपूर्ण है। विभिन्न विमर्शों के संदर्भ में एक सक्षम, उर्वर एवं उन्मुक्त करने वाली शिक्षाशास्त्र का निर्माण, शिक्षा के संस्थायी चरित्र के समीक्षायी समझ के माध्यम से स्थापित किया जा सकता है। इस संदर्भ में शिक्षा की प्रक्रिया को निर्मित करने वाले महत्त्वपूर्ण पक्षों यथा उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें, शिक्षाशास्त्रीय विधियां, मूल्यांकन, अनुशासन इत्यादि से सम्बंधित विभिन्न वैकल्पिक तथा समानान्तर विचारों व विमर्शों का संदर्भगत विश्लेषण भी होना चाहिये।

## उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :—

- शिक्षा के सामाजिक विमर्श के अंतर्गत विभिन्न मुद्दों का विश्लेषण करता।
- शिक्षा को प्रभावित करनेवाले महत्त्वपूर्ण राजनैतिक संदर्भों को जानना।
- बिहार के विशेष सामाजिक—आर्थिक तथा राजनीतिक पृष्ठिभूमि में विद्यालय की परिवर्तनशील प्रकृति को समझना।
- आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में विद्यालय शिक्षा के बदलते सरोकार को समझना।

# समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा

**पूर्णांक : 100 (70+30)** | **S-1** | **अध्ययन अवधि : 80 घंटा**

## इकाई–1 : समकालीन भारतीय समाज की चुनौतियाँ और शिक्षा

- विविधता, असमानता तथा वंचना : अवधारणात्मक समझ तथा शैक्षिक संदर्भ
- समाज में सत्ता, वर्चस्व तथा प्रतिरोध : अवधारणा, प्रकार, कारकों तथा प्रभावों की समझ
- समता, समानता और सामाजिक न्याय के लिए शिक्षा : अवधारणा, आवश्यकता एवं अवरोध

सबको शिक्षित करने की परिकल्पना वर्तमान समय में नीति–निर्माताओं, शिक्षाविदों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए एक महत्त्वपूर्ण मसौदा बन गया है। लगभग सभी जाति, क्षेत्र, वर्ग, लिंग तथा धर्म के बच्चे विद्यालयी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, लेकिन गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी शिक्षा तक समतामूलक पहुंच आज भी एक चुनौती बनी हुई है। एक तरफ समाज में व्याप्त असमानता तथा वंचना ने शिक्षा के समान अवसरों को प्रभावित किया है। वहीं दूसरी ओर विद्यालय की अंतःक्रियात्मक प्रक्रिया में भी असमानता, वंचना तथा वर्चस्व जैसी विभेदीकृत गतिविधियाँ अंतर्निहित हैं। प्रस्तुत इकाई में विविधता, असमानता तथा वंचना की अवधारणा तथा उसको संचालित करने वाली विचारधाराओं यथा सत्ता, वर्चस्व एवं प्रतिरोध की समीक्षायी समझ के माध्यम से शिक्षकों में समाजशास्त्रीय चेतना तथा दृष्टिकोण का निर्माण किया जाएगा। विद्यालय में तथा इसके सापेक्ष व्याप्त विषमता से निपटने के लिए समानता, समता, सामाजिक न्याय तथा समावेशीकरण पर आधारित अवधारणाओं तथा प्रयासों की विशेष समीक्षा की जाएगी।

## इकाई–2 : शिक्षा के समकालीन मुद्दे

- आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, सामाजिक परिवर्तन तथा शिक्षा
- शिक्षा में गुणवत्ता का सवाल
- सार्वजनिक शिक्षा बनाम निजी शिक्षा
- शिक्षा का निजीकरण : उदारवादी दृष्टिकोण तथा आलोचनात्मक विमर्श
- अभिवंचित एवं उपेक्षित वर्ग के लिए शिक्षा
- समान विद्यालय व्यवस्था

समाज निरंतर परिवर्तनशील है। सामाजिक प्रगति व्यक्ति/समाज के सामाजिक आर्थिक राजनैतिक परिस्थितियों एवं संबंधों का प्रभाव सामाजिक स्तरण में दिखाई पड़ती है। इसका प्रभाव परिवार राज्य एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं पर पड़ता है। वैश्विक स्तर पर सामाजिक परिवर्तन से उपजी शिक्षाई प्रगति आधुनिक सामाजिक मूल्यों संरचनाओं तथा ज्ञान  का प्रसार आधुनिकीकरण द्वारा प्रसारित होती है। इसके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वजनीकरण के उदारवादी दृष्टिकोण के आलोचनात्मक चिंतन की अवश्य्क़कता है। सार्वजानिक शिक्षा जहाँ अभिवंचित वर्ग को तथा उपेक्षित वर्ग को प्रारंभिक शिक्षा के लिए जिम्मेवार है वहीं निजी शिक्षा को व्यापारीकरण से मुक्त होकर शिक्षा के सार्वजनीकरण के उद्देश्य से समतामूलक पहुँच एवं भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु एक मंच पर लेन की आवश्यकता है, जिसे हम सामान विद्यालय व्यवश्ता के रूप में देखने का प्रयास करेंगे।

**इकाई–3 : शिक्षा के राजनैतिक एवं संवैधानिक संदर्भ**

- राज्य, लोकतंत्र और शिक्षा : भारतीय संविधान के संदर्भ में
- शिक्षा का सार्वभौमीकरण : अवधारणा, अवरोध एवं राज्य की भूमिका
- बच्चे और शिक्षा का अधिकार : संवैधानिक प्रावधान एवं संबंधित विमर्शों के परिप्रेक्ष्य में
- राष्ट्रीय विकास और शिक्षा

शिक्षा एक राजनैतिक तत्व भी है क्योंकि इसके स्वरूप को कई तरीकों से राज्य के नीतियों व संस्थाओं द्वारा विकसित किया जाता है। अतः यह कहना सही होगा कि राज्य की जो प्रकृति होती है, उनके द्वारा संचालित शिक्षा की प्रकृति भी वैसी ही होती है। भारत एक लोकतांत्रिक देश है अतः इसकी शिक्षा में विभिन्न लोकतांत्रिक मूल्यों को लिये हुए संवैधानिक प्रावधानों की व्यवस्था है, जो हर बच्चे की शिक्षा तथा उसकी स्थितियों को प्रभावित करते हैं। राज्य के लिए शिक्षा का सार्वभौमीकरण करना एक महत्त्वपूर्ण घोषित उद्देश्य है, जिसके कारण बच्चों के लिए शिक्षा के अधिकार को लागू करने पर विशेष बल दिया गया। अपने कल्याणकारी चरित्र के साथ–साथ वैसी राजनैतिक स्थितियों को समझना भी जरूरी है जिसके कारण शिक्षा की स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। प्रस्तुत इकाई में इन सभी बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की गई है।

**इकाई–4 : शिक्षा और सामाजिक अपेक्षाएं**

- शिक्षा, विद्यालय तथा समुदाय : अपेक्षा, समकालीन बदलाव तथा प्रभाव
- शिक्षायी संस्थाएं : सामाजिक परिवर्तन व पुनर्निर्माण के अभिकरण के रूप में
- आर्थिक सुधारों का शिक्षा पर प्रभाव
- शिक्षा और 'माध्यम' भाषा
- समाज में नवाचार और विकास के लिए शिक्षा

विद्यालयी शिक्षा के इर्द–गिर्द तथा उसके भीतर व्याप्त विफलता, वंचना तथा विषमता की परिस्थितियों के कारण जहाँ विद्यालय के प्रति एक उदासीनता का दृष्टिकोण बनता है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति तथा समाज निर्माण की अंतर्निहित क्षमता के कारण विद्यालय को एक संभावना के रूप में भी देखा जाता है। बिहार के विशेष सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक पृष्ठिभूमि में विद्यालय के परिवर्तनकारी चरित्र को समझना आवश्यक है। इसके साथ हीं जहां बदलते समय के साथ, शिक्षा के 'माध्यम' भाषा के तौर पर अंग्रेजी की तरफ समाज के झुकाव को देखा जा सकता है वहीं भारतीय भाषाओं के विस्तार एवं प्रतिष्ठा का सवाल भी उठ रहा है। इन सब अपेक्षाओं का प्रभाव विद्यालयी परिवेश एवं प्रक्रियाओं पर पड़ना स्वाभाविक है, जिसकी पड़ताल इस इकाई में की जाएगी।

**इकाई–5 : विद्यालय और शिक्षा नीतियां : शिक्षा की समकालीन समझ के संदर्भ में**

- विद्यालयी शिक्षा का विकास : ऐतिहासिक एवं समकालीन नीतिगत परिप्रेक्ष्य
- विद्यालयों के नाम, व्यवस्था तथा भवन संरचनाओं के नीतिगत संदर्भ
- शिक्षक और शिक्षा नीतियां
- विद्यालयी पाठ्यचर्या और मूल्यांकन प्रक्रिया पर नीतियों का प्रभाव

समकालीन भारतीय शिक्षा की व्यापक समझ के लिए उन नीतियों की पड़ताल आवश्यक है जो शैक्षिक बदलाव की पृष्ठभूमि में रहे हैं। खासकर, उन नीतियों को जानना–समझना जरूरी है, जिनका प्रभाव प्रारम्भिक विद्यालयों के विभिन्न घटकों पर पड़ा है। शिक्षा नीतियों को समझने की एक आम प्रवृति है कि उनके संस्तुतियों को जान भर लेना। लेकिन, इससे कोई खास समझ नहीं बन पाती है क्योंकि नीतियों के अंतर्गत दिए गए तथ्य वास्तविक संदर्भ से नहीं जुड़ पाते हैं। इसलिए, प्रस्तुत इकाई में समकालीन भारतीय शिक्षा की समझ बनाने के लिए प्रशिक्षुओं को विद्यालय के विभिन्न आयामों का विश्लेषण इस प्रकार करने का अवसर प्रदान किया जाएगा  जिससे उन्हें देश की प्रमुख शिक्षा नीतियों तथा उनके विकासक्रम का ज्ञान अपनी संस्था के संदर्भ में मिल सके। इसके अंतर्गत अध्ययन का मुख्य फोकस भारतीय शिक्षा, विद्यालयों के नाम, भवन संरचना, शिक्षक, पाठ्यचर्या और मूल्यांकन से सम्बंधित नीतिगत विकास को समझना होगा।

**प्रस्तावित कार्य**

- विद्यालय के अंदर असमानता, भेदभाव तथा वंचना के तत्व किस प्रकार समाहित हैं, कुछ वास्तविक उदाहरणों को प्रस्तुत करें।
- विद्यालय समाज अन्र्तसम्बन्ध के विषय में शिक्षकों तथा समुदाय के सदस्यों के लिए अलग–अलग साक्षात्कार तैयार करना तथा साक्षात्कार पश्चात् उनका अध्ययन कर प्रतिवेदन तैयार करें।
- आपके विद्यालय व समुदाय का सम्बंध तथा दोनों स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में एक दूसरे की भागीदारी के उपलब्ध अवसरों को चिन्हित करें।
- विभिन्न माध्यमों द्वारा अपने विद्यालय (जहाँ आप सेवारत हैं) से जुड़े ऐतिहासिक तथ्यों को एकत्र करने के लिये एक विस्तृत योजना का निर्माण करें।
- विद्यालयी शिक्षा से जुड़े विभिन्न दस्तावेजों व रिपोर्टों का संग्रह करें।
- ऊपर उल्लेखित विषयवस्तु के अनुरूप उन दस्तावेजों व रिपोर्टों के विभिन्न भागों को वर्गीकृत करें।
- अपने विद्यालय से भिन्न किसी अन्य विद्यालय का भ्रमण करें तथा उसके इतिहास के बारे में पता लगायें।
- विभिन्न समकालीन शिक्षायी योजनाओं के विषय में विस्तृत जानकारी इकट्ठा करें तथा अपने विद्यालय में उसके प्रभावों का अध्ययन करें।

**S-2**

# संज्ञान, सीखना और बाल विकास

## संदर्भ

बच्चों में चिंतन का विकास किस प्रकार होता है तथा संज्ञान व सीखने के मध्य क्या सम्बंध है, इन सब की सैद्धांतिक तथा व्यवहारिक समझ प्रशिक्षुओं में होनी चाहिए ताकि वे बच्चे के अधिगम को सही दिशा दे सके। इस संदर्भ में बुद्धि की अवधारणा पर भी साथ में चर्चा करना जरूरी होगा क्योंकि सीखने–सिखाने से सम्बंधित इसके कई पूर्वाग्रहों को समझना और उन्हें दूर करना जरूरी है। समाज बच्चों को सीखने में कैसे मददगार होता है, यह भी एक महत्त्वपूर्ण पहलू है जिसके बिना आज के सीखने–सिखाने की समझ नहीं बनाई जा सकती। शिक्षकों के शिक्षण के दृष्टिकोण का एक और पहलू है बच्चों में सम्प्रत्य विकास, जिसको समझने से वे अपने शिक्षण को भी बेहतर कर पाएंगे। साथ ही, उनके सीखने के तरीकों में भी कई भिन्नताएं मिलेंगी। सीखना स्वयं में एक विकास की प्रक्रिया है, जो बाल विकास के विभिन्न चरणों से भी जुड़ा हुआ है। अतः, एक बच्चे विशेष के संदर्भ में सीखने की प्रक्रिया को किस प्रकार से संचालित करना है, इसके लिये मूल रूप से उस बच्चे के विकास की प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। शिक्षा के बदलते परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका काफी व्यापक हो गई है। अब, बच्चे एक ऐसे शिक्षक या शिक्षिका की माँग करते हैं जो उनसे मित्रवत व्यवहार करे, उनकी भावनाओं को समझे तथा उनके व्यक्तित्व को निखारे। साथ ही यह भी स्पष्ट तौर पर कहना जरूरी है कि शिक्षक इस तथ्य को पूरे मनोयोग के साथ स्वीकारें कि सभी बच्चे स्वभाव से ही सीखने के लिए प्रेरित रहते हैं और उनमें सीखने की क्षमता वयस्कों से अलग होती है। आज हम सीखने के शुरूआती दृष्टिकोणों से काफी आगे निकल आए हैं जो सीखने को लेकर हमारी सोच में हो रहे निरन्तर विकास का प्रतिफल है। लेकिन, सीखने की शुरूआती मान्याताओं जैसे व्यवहारवाद का प्रभाव आज भी विद्यालयी शिक्षा पर गहरा है, जिसकी आलोचनात्मक समझ शिक्षक को होनी चाहिए। इस तरह, बच्चों के सीखने एवं विकास को लेकर कई ऐसे पहलु हैं जिनकी समझ के बिना शिक्षण करना एक अधूरा प्रक्रम होगा। अतः प्रशिक्षुओं से अपेक्षा है कि वे इन्हें समझे और इनको अपने शिक्षण में प्रयोग करें।

## उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- संज्ञानात्मक एवं सम्प्रत्यात्मक विकास की अवधारणा तथा सीखने के संदर्भ में इसके सैद्धांतिक आधारों का विश्लेषण करना।
- सीखने की योग्यता एवं निर्योग्यता (डिसेबिलिटी) की समझ विकसित करना।
- सीखने का एवं सीखने के लिए आकलन का विश्लेषण करना।
- सीखने के कुछ आरम्भिक सिद्धांतों से अवगत होना तथा उनकी आलोचनात्मक समझ बनाना।
- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में समाज की क्या भूमिका होती है, इसकी समझ बनाना।
- सीखने को प्रभावित करने वाले कारक की आलोचनात्मक समझ बनाना।

# संज्ञान, सीखना और बाल विकास

**पूर्णांक : 100 (70+30)** **S-2** **अध्ययन अवधि : 80 घंटा**

**इकाई–1 : बच्चों में संज्ञानात्मक एवं संप्रत्यय विकास**

- संज्ञानात्मक विकास की समझ (बच्चों का संदर्भ)
- संज्ञानात्मक विकास और सीखना (ज्याँ पियाजे के सिद्धांत का विशेष संदर्भ)
- संज्ञानात्मक विकास और बुद्धि की अवधारणा का ऐतिहासिक संदर्भ तथा समकालीन संदर्भ में बुद्धि की सैद्धांतिक समझ
- बच्चों में सम्प्रत्यय विकास : – सम्बंधित मानसिक प्रक्रियाएं एवं प्रभावित करनेवाले कारक
  – ब्रुनर मॉडल एवं अन्य सैद्धांतिक आधार
  – कार्य–कारण की समझ का विकास

बच्चों के संज्ञानात्मक एवं सम्प्रत्यय विकास को समझना जरूरी है जिससे एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों में विश्लेषण व समस्या समाधान की क्षमता को विकसित करने तथा अपने शिक्षण में उन्हें जगह देने के प्रति तैयार हो सके। अलग–अलग बच्चों के संदर्भ में बुद्धि के क्या मायने हैं, यह आज के शिक्षक या शिक्षिका को जानना बेहद जरूरी है। इन सभी विषयों पर विशेष चर्चा इस इकाई के माध्यम से की जायेगी। बच्चे जन्म से प्रतिदिन कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। वे अपनी ज्ञानेन्द्रियों से प्रत्येक पल मिलने वाले नए–पुराने अनुभवों के आधार पर अपने सम्प्रत्ययों को गढ़ते रहते हैं। सम्प्रत्यय विकास हर बच्चे के लिए जरूरी है क्योंकि इसी के आधार पर वे अपने जीवन की हर गतिविधि को संचालित करते हैं। किसी काम के पीछे क्या कारण है, कोई घटना क्यों घटती है, इसकी वैज्ञानिक समझ, ये सब सम्प्रत्यय विकास के ही विविध पहलू हैं, जिनकी चर्चा इस इकाई में की जाएगी।

**इकाई–2 : बाल विकास एवं सीखना**

- बाल विकास और सीखने में अंतर्सम्बंध : परिचयात्मक समझ, परिपक्वता और सीखना
- सीखने की योग्यता एवं निर्योग्यता (लर्निंग डिसेबिलिटी)
- सीखने का एवं सीखने के लिए आकलन

बाल विकास एक जटिल प्रक्रिया है जिसके कई आयाम होते हैं। साथ ही इस विकास की प्रक्रिया में विभिन्न कारकों जैसे–परिवेश, परिवार, संस्कृति, पोषण इत्यादि की भूमिका का विशेष महत्त्व होता है। क्या विकास का सीखने से कोई सम्बंध है, इसपर भी शुरूआती समझ होनी चाहिए। बच्चों के वृद्धि एवं विकास को समझने के लिए, कुछ खास अध्ययन के तरीके को समझना चाहिए अन्यथा उनके विकास के विभिन्न पहलुओं को ठीक से समझा नहीं जा सकता है। एक शिक्षक को बाल विकास और सीखने के मध्य अंतर्सम्बंध को भी समझना चाहिए ताकि सीखने के माध्यम से विकास तथा विकास के माध्यम से सीखने को गति प्रदान किया जा सके। सीखने में व्यक्तिगत विभिन्नता का होना स्वाभाविक है, इस सन्दर्भ में सीखने की योग्यता एवं निर्योग्यता जैसे सन्दर्भ का अध्ययन आवश्यक है। आकलन के बिना सीखने को गति प्रदान नहीं किया जा सकता। इस इकाई में आप सीखने का एवं सीखने के लिए आकलन के सम्बन्ध में भी जानकारी प्राप्त करेंगे।

**इकाई–3 : सीखने के व्यवहारवादी एवं सूचना प्रसंस्करण सिद्धांतों की समझ**

- व्यवहारवाद के दृष्टिकोण से सीखने का आशय : अवधारणा एवं आधारभूत मान्यताएं
- अनुक्रिया अनुबंध सिद्धान्त (पावलव) का संदर्भ, विश्लेषण, अलोचनात्मक समझ व शैक्षिक निहितार्थ
- सक्रिय अनुबंध सिद्धान्त (स्किनर) का संदर्भ, विश्लेषण, अलोचनात्मक समझ व शैक्षिक निहितार्थ
- सूचना प्रसंस्करण मॉडल के अनुसार सीखने की प्रक्रिया

बच्चे कैसे सीखते हैं? इसका कोई सार्वभौमिक उत्तर मुश्किल है। अलग–अलग मनोवैज्ञानिक विचारधाराओं में सीखने को लेकर भिन्न सिद्धांत व मान्यताएं विद्यमान हैं, जिनकी ऐतिहासिक समझ को इस इकाई में सम्मिलित किया गया है। इस इकाई के अंतर्गत जो बिन्दू शामिल हैं उनपर केवल परिचयात्मक चर्चा ही यहां की जाएगी। सीखने से सम्बंधित जो आरम्भिक विचार व्यवहारवाद का रहा है, उसका प्रभाव भी आज के विद्यालयों के शिक्षण में देखा जा सकता है। अतः व्यवहारवादी दृष्टिकोण से सीखना क्या है, इसकी समझ भी प्रशिक्षु बना लें तो वे अन्य सिद्धांतों को और बेहतर तरीके से समझ पाएंगे। साथ ही, वे यह जान पाऐंगे कि आज हम सीखने को जिस प्रकार से समझते हैं और सीखने को लेकर जो आरम्भिक व्यवहारवादी दृष्टिकोण विकसित हुआ, उसके मध्य कितना बड़ा अंतर है। सीखने को लेकर एक और महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण है सूचना प्रसंस्करण मॉडल का, जो सीखने में सूचनाओं और स्मृति की भूमिका को सम्बोधित करता है। इन सब बिन्दुओं पर चर्चा इस इकाई में की जाएगी।

**इकाई–4 : बच्चों के विकास एवं सीखने में समाज की भूमिका**

- सीखने और समाज में अंतर्सम्बंध
- सामाजिक अधिगम का सिद्धांत (बैन्डूरा) : प्रेक्षण व समाजीकरण द्वारा सीखना, शैक्षिक निहितार्थ
- सामाजिक–सांस्कृतिक सिद्धांत (वायगोत्स्की) : प्रमुख मान्यताएं, शैक्षिक निहितार्थ एवं समालोचना

किसी भी समाज की अपनी मान्यतायें, अपेक्षायें व व्यवस्था होती है जो बच्चे के सामाजिक विकास को प्रभावित करते हैं। समाज बच्चों के सीखने में अहम भूमिका निभाता है। समाज में रहकर बच्चे सामाजिक जीवन की आवश्यकताओं की दृष्टि से बहुत कुछ सीखते हैं जैसे– हाव–भाव, रहन सहन, कार्य करने के तरीके, भाषा, रीति–रिवाज, आदि। घर–परिवार के सदस्यों के साथ रहते हुए, खेलते हुए, विभिन्न प्रकार की क्रिया करते हुए वे अपने समाज और संस्कृति के मूल्य, नियम, मान्यताएँ, भूमिकाएँ, सोचने–विचारने तथा व्यवहार करने के तौर–तरीके भी सीखते हैं। एक शिक्षक के लिए इन्हें समझना इसलिए जरूरी है क्योंकि बच्चों के सीखने–सिखाने के दृष्टिकोण से इनका विशेष महत्त्व है। सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता तथा समस्याओं को कक्षायी विमर्श में किस प्रकार स्थान दें, इसके लिये भी एक शिक्षक को तैयार रहना चाहिए।

**इकाई–5 : सीखने को प्रभावित करनेवाले कारक**

- सीखने के न्यूरोदैहिक (न्यूरो–फिजियोलॉजिकल) आधार : मस्तिष्क की सरंचना एवं सीखने में इसकी भूमिका, सीखने के न्यूरोदैहिक सन्दर्भ में हुए शोध के शैक्षिक निहितार्थ
- सीखने में अभिप्रेरणा व अवधान (अटेन्शन) की भूमिका, प्रक्रिया एवं विविध स्वरूप
- सीखने–सिखाने में स्मृति (मेमोरी) की भूमिका एवं शैक्षिक निहितार्थ

न्यूरोदैहिक क्षेत्र में हुए शोध निष्कर्षों ने सीखने की प्रक्रिया को नए तरीके से समझने में मदद की है। नवाचारी शैक्षिक विमर्शों में यह जोर देकर कहा जा रहा है कि बच्चों के सीखने के गतिकी को समझने के लिए मस्तिष्क की सरंचना एवं सीखने में इसकी भूमिका, सीखने के न्यूरोदैहिक सन्दर्भ में हुए शोध के शैक्षिक निहितार्थ को समझना आवश्यक है। अतः शिक्षक या शिक्षिका के लिए यह जरूरी है कि वह बच्चों के सीखने के न्यूरोदैहिक आधार को समझे ताकि बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को गति प्रदान किया जा सके। इसके लिए क्या तरीके होने चाहिए तथा शिक्षक की उसमें क्या भूमिका हो, इसपर चर्चा इस इकाई में की जाएगी। सीखना न्यूरोदैहिक प्रक्रिया के अलावा एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया भी है। सीखने की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में अभिप्रेरणा एक महत्त्वपूर्ण कारक है जो बच्चों के सीखने को प्रभावित करता है। यदि शिक्षकों में अभिप्रेरणा की समझ होगी तो वह अपने बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को बेहतर तरीके से संचालित कर पाएंगे। इन बिन्दुओं पर व्यापक चर्चा इस इकाई के माध्यम से की जाएगी। इस इकाई में सीखने में स्मृति की भूमिका पर भी चर्चा की जाएगी।

**प्रस्तावित कार्य**

- बच्चों में परिप्रेक्ष्य एवं विभिन्न विषयों से संबंधित अवधारणाओं का विकास कैसे होता है, इस पर अपने विद्यालय के अन्य शिक्षक–शिक्षिकाओं से चर्चा करें तथा उनके विचारों का विश्लेषण करें।
- आपके विद्यालय में सीखने का व्यवहारवादी दृष्टिकोण कहां–कहां शामिल है, इसकी पहचान करके विश्लेषण करें।
- सूचना प्रसंस्करण मॉडल की क्या–क्या सीमाएं हैं, इस संदर्भ में एक परिचर्चा का आयोजन करें तथा उसके निकले बिन्दुओं को सूचीबद्ध करें।
- क्या आपके विद्यालय में सीखने की प्रक्रिया को रचनावादी दृष्टिकोण से देखा जाता है, यदि हाँ तो इसकी पहचान करके विश्लेषण करें।
- कक्षागत अनुभव के आधार पर मस्तिष्क की सरंचना एवं सीखने की प्रक्रिया के अंतर्संबंध को विश्लेषित कीजिये।
- सीखने के न्यूरोदैहिक सन्दर्भ में हुए शोध के निष्कर्षों को क्या आप अपने विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया से सहसम्बन्धित कर पाते हैं? कक्षागत स्थिति के आधार पर विश्लेषण कीजिये।
- क्या आप अपने विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करते हैं? उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिये कि सीखने के लिए अभिप्रेरणा का होना आवश्यक है।

**S-3**

# कार्य और शिक्षा

## संदर्भ

कार्य मानव जीवन को समृद्ध करनेवाली गतिविधि है। लेकिन, सबसे अहम बात यह है कि कार्य बच्चों के लिए सीखने का महत्वपूर्ण जरिया है। बच्चे कार्य के द्वारा अपनी एक अस्मिता पाते हैं और स्वयं को उपयोगी और महत्वपूर्ण समझते हैं क्योंकि कार्य उनको अर्थवान बनाता है और इसके माध्यम से वे समाज का हिस्सा बनते हैं और ज्ञान के निर्माण में सक्षम हो पाते हैं। कार्य के कुछ पाने योग्य लक्ष्य होते हैं, जिसे पूरा करने के दौरान सामाजिक अंतर्निभरता, आत्म—नियंत्रण, की भावना का विकास होता है। इस विषयपत्र में कार्य के जिस पहलू पर विशेष बल दिया गया है उसका संबंध कार्य के संदर्भ में अर्थ—निर्माण और ज्ञान के सृजन से है। यहां अकादमिक शिक्षा और कार्य को साथ—साथ जोड़कर सीखने—सिखाने के प्रक्रिया को संचालित किए जाने पर जोर है, जो महात्मा गांधी के बुनियादी शिक्षा की मूलभूत अवधारणा है। कार्य को इस्तेमाल करने का शिक्षाशास्त्रीय अनुभव बचपन और किशोरावस्था के विभिन्न स्तरों में विकास का एक प्रभावी और समीक्षात्मक औजार बन पाएगा। इसलिए काम—केंद्रित शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा से अलग है। पाठ्यचर्या को यह पहचानना चाहिए कि जैसे—जैसे बच्चा बड़ा होता है उसे कार्य के संसार में प्रवेश करने की तैयारी की ज़रूरत है और काम—केंद्रित शिक्षाशास्त्र में बढ़ती हुई जटिलताओं के साथ अनुसरण किया जा सकता है लेकिन उसको ज़रूरी लचीलेपन और प्रासंगिकता से समृद्ध भी रखना होगा। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—2005 का मानना है कि काम—आधारित सामान्य दक्षताएँ शिक्षा के हर स्तर पर दी जानी चाहिए। कार्य आवश्यक रूप से अंतरअनुशासनात्मक होता है इसलिए कार्य को अगर स्कूली पाठ्यचर्या से जोड़ना हो तो अच्छी खासी शिक्षाशास्त्रीय समझ की ज़रूरत होगी जिससे यह समझा जा सके कि कार्य को अधिगम से कैसे समेकित किया जाए और इसका आकलन एवं मूल्यांकन कैसे हो? स्कूल की पाठ्यचर्या में कार्य के संस्थानीकरण के लिए रचनात्मक और साहसिक चिंतन की आवश्यकता होगी। उत्पादक—कार्य को पाठ्यचर्या का केंद्रीय आधार बनाया जाए तो पाठ्यचर्या की किताबी, सूचना—आधारित और सामान्यतया चुनौती न दी जा सकने वाली पद्धति बदली जा सकती है और बच्चों को जीवन—संबंधी आवश्यकताओं से जोड़ा जा सकता है। यह विषयपत्र उपरोक्त विचारों को वास्तविकता में उतारने का एक पहल है, जो प्रशिक्षु—शिक्षकों के अकादमिक दृष्टिकोण को कार्य के उत्पादक अनुभव के माध्यम से समृद्ध बनाएगा। यह अपेक्षा है कि उत्पादक कार्यों के माध्यम से प्रशिक्षुगण अपने प्रशिक्षण संस्थान और विद्यालय की शिक्षण प्रक्रिया में नवीतना लाएंगे।

## उद्देश्य

- कार्य के माध्यम से प्रशिक्षुओं में श्रम एवं कौशल के प्रति सम्मान विकसित करना।
- कार्य को अर्थ—निर्माण और ज्ञान सृजन के माध्यम के तौर पर उपयोग करना।
- उत्पादक कार्य को स्कूली पाठ्यचर्या के संदर्भ में समझना।
- कार्य के माध्यम से विभिन्न तकनीकों एवं कौशलों का विकास करना।
- उत्पादक कार्यों द्वारा अपने परिवेश में बदलाव लाना।

# कार्य और शिक्षा

**पूर्णांक : 50 (50 आंतरिक)** | **S-3** | **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

**इकाई–1 : कार्य और शिक्षा : अवधारणात्मक समझ**

- कार्य और शिक्षा : अवधारणा तथा ऐतिहासिक संदर्भ
- कार्य और ज्ञान की दुनिया का जुड़ाव : – पाठ्यपुस्तक–केन्द्रित शिक्षण से आगे
  – बाल कार्य (चाइल्ड वर्क) बनाम बाल श्रम (चाइल्ड लेबर)
  – कौशल विकास के लिए कार्य
- पाठ्यचर्या में कार्य की भूमिका : कार्यकेन्द्रित शिक्षणशास्त्र की समझ

कार्य और शिक्षा की अवधारणा नयी नहीं है। इसके ऐतिहासिक संदर्भ को बुनियादी शिक्षा की मान्यताओं में देखा जा सकता है। यहां, कार्य और शिक्षा की अवधारणात्मक समझ में इसके सभी पहलुओं पर बात होगी हालांकि मूल जोर श्रम के प्रति सम्मान, कार्य के द्वारा ज्ञान सृजन, तथा कार्य के माध्यम से व्यक्तिगत–सामाजिक–परिवेशीय बदलाव पर होगा। इस इकाई में कार्य और अकादमिक ज्ञान की दुनिया के जुड़ाव पर भी बात की जाएगी। चुंकि, कार्य को यहां शिक्षणशास्त्रीय नजरिए से देखा जा रहा है, अतः यह किस तरह के नए शिक्षण संदर्भ को रचेगा, इस बात की चर्चा होगी। कार्य और शिक्षा के पाठ्यक्रम की यह चुनौती भी है कि यह बाल कार्य, जो की सीखने–सिखाने के उद्देश्य के साथ संचालित होता है तथा बाल श्रम, जो कि बच्चों के शोषण एवं बाल अधिकारों के हनन का द्योतक है, में फर्क कर सके। बच्चों के कौशल विकास का उद्देश्य इसके साथ–साथ चले। प्रारम्भिक स्तर की पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम में कार्यकेन्द्रित शिक्षणशास्त्र के समावेश को लेकर विभिन्न विषयों के विषयवस्तु को खंगालना भी इस इकाई में शामिल है।

**इकाई–2 : कार्य और शिक्षा : प्रायोगिक संदर्भ**

***अनिवार्य कार्य :***

- **दैनिक जीवन के अभिन्न कार्य :** साफ–साफाई, खाना पकाना, घरेलू सामानों की मरम्मत, घरेलू जिम्मेवारियों में भागीदारी, घरेलू बजट बनाना, अपने आस–पास के परिवेश का रख–रखाव।
- **कृषि एवं बागवानी :** इसके लिए उपयुक्त जमीन का निर्माण; स्थानीय फल–फूल, सब्जी, वनस्पतियों एवं फसलों की जानकारी तथा उनको उगाना; सिंचाई और खादों के बारे में समझ, वृक्षारोपण, फूलवारी, किचेन गार्डन बनाना।
- **मिट्टी का काम :** मिट्टी के बर्तन, खिलौने, गमले, मॉडल, मूर्ति आदि बनाना; चाक के माध्यम से मिट्टी के बर्तन बनाने की प्रक्रिया को समझना; तरह–तरह के मिट्टियों को जानना।

***वैकल्पिक कार्य : (निम्न में से कोई दो कार्य)***

- **बिजली का काम :** सामान्य वायरिंग की समझ, बिजली के घरेलू उपकरणों की मरम्मत, स्वीच लगाना, बिजली बचाने के तरीकों की समझ, रोशनी करने के नए उपकरणों की समझ, विद्युतीय उर्जा के नवीकरणीय स्रोतों की समझ एवं उपयोग, इलेक्ट्रिकल टूल्स की समझ।
- **बायोडिग्रेडेबल तथा नॉन–बायोडिग्रेडेबल कुड़ा का प्रबंधन :** कूड़ा संग्रह के नवाचारी तरीकें, उनकी व्यवस्था की समझ, कबाड़ से जुगाड़ की अवधारणा की समझ, जागरूकता कार्यक्रम, अपने घर के कूड़े के उचित निपटारे की समझ।
- **पशुपालन व लघु उद्योग की समझ :** मत्स्य, मधुमक्खी पालन, रेशम उद्योग, दुग्ध उद्योग आदि की समझ। आस–पास के किसी एक सम्बंधित पशुपालन केन्द्र तथा लघु–उद्योग का केस स्टडी करना
- **फोटोग्राफी–रिपोर्टिंग–फिल्म बनाना :** फोटो खींचने की कला, विडियोग्राफी, सामान्य फिल्मों या आडियो–विडियो क्लिपिंग को बनाना।
- **स्थानीय संदर्भ के अनुसार कोई अन्य कार्य विकल्प :** प्रशिक्षण केन्द्र व प्रशिक्षु द्वारा तय किया जाए। जैसे कि स्थानीय कलाओं व दस्तकारी का कार्य आदि।

इस इकाई के अंतर्गत कुछ उपयोगी कार्यों की सूची दी गयी है। अनिवार्य सूची के अंतर्गत दैनिक जीवन के अभिन्न कार्य, कृषि एवं बागवानी, मिट्टी का काम सभी प्रशिक्षुओं को करने होंगे। इसके साथ ही, वैकल्पिक सूची में से कम से कम दो कार्य प्रशिक्षुओं द्वारा जरूर चुना जाये। ऐसी व्यवस्था जरूर होनी चाहिए कि वैकल्पिक सूची का कोई कार्य न छूटे। वैकल्पिक सूची के अंतर्गत, प्रशिक्षण केन्द्र व प्रशिक्षुओं को यह विकल्प भी है कि वे अपने स्थानीय संदर्भ एवं आवश्यकता के अनुसार एक कार्य–क्षेत्र स्वयं से बना सकते हैं। कुल मिलाकर देखें तो प्रत्येक प्रशिक्षु को कम से कम पांच कार्य करने होंगे। चूकिं, इन कार्यों की प्रकृति प्रायोगिक है अतः प्रशिक्षण केन्द्रों से अपेक्षा है कि वे इन कार्यों को करने के लिए प्रशिक्षुओं को भरपूर समय दें। यह भी गौर करनेवाली बात है कि लगभग सभी सूचीबद्ध कार्यों के माध्यम से कुछ सामग्रियों का उत्पादन भी होगा। अतः सूचीबद्ध कार्यों के बारे में महज जानकारी एकत्र कर लेने से काम नहीं चलेगा। बल्कि उनके उत्पादों का प्रयोग प्रशिक्षण केन्द्र तथा प्रशिक्षुओं के विद्यालय में दिखायी देना चाहिए, जिसकी अपेक्षा इस इकाई तथा अगली इकाई में की गई है।

**इकाई–3 : प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय में कार्य और शिक्षा का संदर्भ**

- प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालयी परिवेश को साफ–सुथरा तथा आकर्षक बनाने के लिए योजना निर्माण तथा उसके अनुरूप कार्य
- प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय में कृषि / बागवानी का कार्य
- अपने सहकर्मियों तथा विद्यार्थियों के साथ मिट्टी का काम करना
- प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय में बिजली से सम्बंधित उपकरणों के रख–रखाव तथा मरम्मत में सहयोग करना
- प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय में बायोडिग्रेडेबल तथा नॉन–बायोडिग्रेडेबल कुड़ा का प्रबंधन करना।
- शिक्षण से सम्बंधित आडियो–विडियो क्लिपिंग्स का निर्माण करना।
- प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय के सभी लोगों के साथ मिलकर कुछ वैसा सामाजिक कार्य करना जिससे आस–पास के लोगों की जिन्दगी पर सकारात्मक बदलाव आए या उनका सामान्य जीवन समृद्ध हो।

इकाई–2 में प्रशिक्षुओं द्वारा जिन कार्यों का चयन कर काम करना है, उसका केन्द्रीय स्थल उनका प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय है। अतः यह इकाई स्वयं में इकाई–2 में किए गए कार्यों को प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय के संदर्भ में उपयोगी बनाने के दृष्टिकोण से रखा गया है। इस इकाई में प्रशिक्षुओं द्वारा चयन किए गए कार्यों के सृजनात्मक प्रयोग को देखने की अपेक्षा है। उदाहरण के तौर पर, प्रशिक्षुओं ने कृषि–बागवानी के बारे में जान–समझ लिया, लेकिन उनके इस ज्ञान को तब तक सार्थक नहीं माना जा सकता जब तक कि वे उस ज्ञान का सृजनात्मक प्रयोग अपने संस्थान, विद्यालय व घर के परिवेश को बेहतर बनाने में नहीं करते हैं। अतः प्रशिक्षुओं द्वारा किए जानेवाले कार्यों का ठोस नतीजा जरूर निकलना चाहिए। इस सम्बंध में कुछ उपयोगी मार्गदर्शन इस इकाई के माध्यम से मिल पाएगा। इस विषयपत्र के अंतर्गत प्रशिक्षुओं के मूल्यांकन यह प्रमुख आधार होगा कि उन्होंने अपने अपने घर, विद्यालय, प्रशिक्षण संस्थान व समाज के परिवेश में अपने संदर्भित कार्य के माध्यम से क्या बदलाव लाया तथा किस–किस प्रकार के समाज उपयोगी कौशलों का विकास किया।

**S-4**

# स्वयं की समझ

## संदर्भ

स्वयं या 'सेल्फ' को हम अपने आंतरिक चिंतन से लेकर बाह्य व्यवहार के स्रोत के तौर पर समझ सकते हैं। इस संदर्भ में शिक्षकों को यह समझना जरूरी है कि एक शिक्षक या शिक्षिका के तौर पर उनका जो व्यक्तित्व निर्मित होता है, उसमें उनके जीवन अनुभव, व्यक्तिगत सोंच एवं सामाजिक मान्यताएँ भी शामिल रहते हैं और इन सब के साथ वे अपनी कक्षाओं में शिक्षण का कार्य करते हैं। अतः इनकी व्यापक समझ हर शिक्षक हो होनी चाहिए ताकि वह अपनी कक्षा शिक्षण को प्रभावी बनाने में इनका सकारात्मक उपयोग कर सके। विद्यालय में हर शिक्षक की जो छवि बनती है, उसमें उसके तथा उसके काम के प्रति बाकि लोगों की धारणाओं का भी योगदान होता है। तभी तो किसी विद्यालय के हर शिक्षक को एक जैसा नहीं पाते हैं। हर किसी में कुछ ऐसी विशिष्टताएं होती हैं जो उसे एक अलग पहचान देती हैं। लेकिन, अक्सर यह होता है कि अधिकतर शिक्षक स्वयं अपनी क्षमताओं के बारे में ही अनभिज्ञ रहते हैं। साथ ही, उनमें कई ऐसे पूर्वाग्रह भी होते हैं जो उनके शिक्षण और बच्चों की शिक्षा को नकारात्मक तौर से प्रभावित करते हैं। अतः आवश्यकता है कि हर शिक्षक या शिक्षिका स्वयं को पहचाने और अपने कार्यों को परखे और संवारे। यह विषयपत्र ऐसे अवसरों को प्रस्तुत करने का प्रयास है। यह अपेक्षा है कि सभी प्रशिक्षु अपने शिक्षण कार्य से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं के बारे में चिंतन—मनन कर पाएंगे। साथ ही, एक व्यक्ति के तौर पर अपनी धारणाओं एवं विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे। इस विषय में शिक्षक द्वारा विद्यालय में किये जानेवाले हर कार्य के ऊपर सोंचना तथा उससे शिक्षक के स्वयं के ऊपर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका विश्लेषण शिक्षक स्वयं कर पाए, ऐसी क्षमता को उसमें विकसित एवं सम्वर्धित करने का प्रयास इस विषयपत्र के माध्यम से किया जाएगा।

## उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :—

- प्रशिक्षुओं को एक व्यक्ति के तौर पर अपनी क्षमता, प्रतिभा, चिंतन, धारणा तथा अभिवृति को पहचानने में मदद करना।
- प्रशिक्षुओं को अपने तथा अपनी वृत्ति के प्रति सजग बनाना।
- प्रशिक्षुओं को अपने जीवन लक्ष्यों के निर्धारण तथा उन्हे प्राप्त करने में मदद करना।
- प्रशिक्षुओं को अपने वृत्ति तथा आत्म चेतना को अभिव्यक्ति करने के लिए सक्षम बनाना।

# स्वयं की समझ

**पूर्णांक : 50 (35+15)** | **S-4** | **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

**इकाई–1 : एक व्यक्ति के रूप में स्वयं को समझना**

- अपने व्यक्तित्व को समझने की जिज्ञासा : 'मैं कौन हूं', 'सेल्फ' बनाम 'इगो', अस्मिता के पहलू
- अपना 'सेल्फ पोट्रेट' लिखना
- आत्म–अभिव्यक्ति की समझ : अपनी स्वीकार्यता, स्वाभिमान, आत्मविश्वास, आत्म–अभिप्रेरणा
- शिक्षक / शिक्षिका के तौर पर अपने मजबूत एवं कमजोर पक्षों का प्रोफाईल बनाना तथा उसके कारणों पर विचार करना।
- उपरोक्त बिन्दुओं से सम्बंधित कार्यशालाओं का आयोजन

हर शिक्षक या शिक्षिका को एक व्यक्ति के तौर स्वयं की धारणाओं और विशेषताओं को समझना इसलिए जरूरी है क्योंकि इसका उनके शिक्षण कार्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह इकाई शिक्षकों को अपने से कुछ सवालों को पूछने तथा उनके जवाबों को सोंचने–समझने का अवसर देता है। इसके अंतर्गत वे अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं पर खुद विचार करेंगे। साथ ही, वे आत्म–अभिव्यक्ति के विभिन्न पहलुओं पर भी स्वयं का विश्लेषण करेंगे। इस इकाई का उद्देश्य यह है कि प्रशिक्षुगण अपने चिंतन–मनन द्वारा अपना प्राफाइल बनाएं तथा उसके मजबूत एवं कमजोर पक्षों की पहचान कर पाने में सक्षम हों। विशेष तौर पर ध्यान रखनेवाली बात यह है कि यहां प्रशिक्षुगण अपने को एक शिक्षक या शिक्षिका के साथ–साथ एक आम व्यक्ति के तौर पर भी विश्लेषित करें।

**इकाई–2 : अपनी अस्मिता के प्रति सजगता**

- शिक्षकों की अस्मिता : समकालीन विमर्श; एक 'आदर्श' शिक्षक की संकल्पना
- शिक्षक की अस्मिता सम्बंधी सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य
- अपनी धारणाओं, चिंतन एवं व्यवहार को समझना : विभिन्न आयामों तथा उनमें बदलाव की समझ
- शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका की पहचान तथा इसके चुनौतियों की समझ : विद्यालय संस्कृति के संदर्भ में
- उपरोक्त बिन्दुओं से सम्बंधित कार्यशालाओं का आयोजन तथा विभिन्न कार्यकलाप

एक शिक्षक या शिक्षिका के तौर पर किसी के द्वारा जो कार्य किया जाता है, वह न केवल उस व्यक्ति को प्रभावित करता है, बल्कि पूरे शिक्षकवर्ग की सामाजिक छवि को गढ़ने में योगदान देता है। वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में शिक्षकों की अस्मिता पर कई सवाल उठ रहे हैं। इसके पीछे शिक्षकों की वृत्तिक मान्यताओं में परिवर्तन, सामाजिक अपेक्षाएं, विद्यालयों में शिक्षण की हकीकत आदि कई कारक हैं। इन सब के विषय में कुछ महत्वपूर्ण सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्यों की चर्चा इस इकाई की शुरूआत में की जाएगी, जिसके आधार पर आगे के भाग में प्रशिक्षुगण अपनी धारणाओं, चिंतन एवं व्यवहार को विश्लेषित करेंगे तथा अपनी भूमिका की पहचान करेंगे। इकाई का फोकस प्रशिक्षुगणों को उनकी अस्मिता के उन महत्वपूर्ण पहलुओं से अवगत कराना है, जिसकी वे जाने–अनजाने उपेक्षा करते रहते हैं। जबकि, उनके व्यक्तित्व एवं कार्य के निर्धारण में उन पहलुओं की विशेष भूमिका होती है।

**इकाई–3 : अपने कार्यों तथा जीवन उद्देश्यों की समझ**

- अपने जीवन लक्ष्यों को विकसित करना तथा उनके भौतिक, भावनात्मक तथा आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्यों को समझना
- स्वयं के बारे में अपने सहकर्मियों, विद्यार्थियों, समुदाय आदि की धारणाओं को जानना।
- दैनिक रिफ्लेक्टीव डायरी लिखना और उसको स्वयं को समझने के लिए प्रयोग करना
- कार्यशाला में प्रेरणादायी कहानियों, फिल्मों, आदि पर चर्चा।
- अपनी खूबी को पहचानना, उसे प्रदर्शित करना तथा शिक्षण में प्रयोग करने के तरीकों को समझना।

शिक्षकों को न सिर्फ अपनी विशेषताओं एवं अस्मिता को समझना जरूरी है बल्कि उन्हें सकारात्मक दिशा में विकसित करना भी आवश्यक है। इसके लिए उन्हें अपने द्वारा रोज़ाना किए जानेवाले कार्यों के वास्तविक लक्ष्यों को समझना तथा उन्हें प्राप्त करने की दिशा में अपने योगदान का विश्लेषण करना होगा। यह इकाई में प्रशिक्षुगण अपने जीवन लक्ष्यों को तय करने तथा उन्हें अपनी गतिविधियों में शामिल करने के तरीकों को जानेंगे। साथ ही, उन्हें प्राप्त करने के लिए कुछ उदाहरणों से अभिप्रेरणा भी प्राप्त करेंगे।

**प्रस्तावित कार्य**

- विद्यालय में अपने कार्यों के लेकर रिफ्लेक्टिव डायरी लिखना तथा उसका विश्लेषण करना।
- आपको जिन शिक्षकों ने पढ़ाया है, उनमें से सबसे पसंदीदा शिक्षक की विशेषताओं का विश्लेषण करें।
- विद्यालय में आप कौन–कौन सी भूमिका निभाते हैं और उसपर आप हर हफ्ते कितना समय व्यतीत करते हैं, इसका विवरण बनाएं तथा विश्लेषण करें।
- आपमें और अन्य शिक्षकों में क्या अंतर है और क्यों है, इसका विश्लेषण करना।
- एक 'अच्छे' शिक्षक या शिक्षिका में क्या गुण होने चाहिए, इसपर अपने आस–पास के शिक्षकों से बात करके रिपोर्ट बनाएं।
- अपने आस–पास के विद्यालय के कुछ शिक्षकों की केस–सटडी करें।

**S-5**

# विद्यालय में स्वास्थ्य, योग एवं शारीरिक शिक्षा

## संदर्भ

बच्चों के विकास के दृष्टिकोण से शारीरिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण आयाम है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा दीर्घकालिक विकास के लक्ष्यों की कार्यसूची 2030 में खेलकूद को दीर्घकालिक विकास के लिए समर्थ बनाने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक माना गया है, तथा वैश्विक स्वास्थ्य, शिक्षा तथा सामाजिक समावेश से जुडे उद्देश्यों की प्राप्ति में खेलकूद के बढते योगदान को स्वीकार किया गया है। गुणवत्तापूर्ण खेलकूद सेवाओं तक पहुँच को अब सभी के लिए मूल अधिकार के रूप में माना जाता है। अतः विद्यालयों में नियमित खेलकूद का आयोजन, बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने का स्वाभाविक विकल्प है। आनन्ददायी गतिविधियाँ, जो बच्चों को भौतिक संसार से एक सकारात्मक संबंध के अवसर प्रदान करती हैं, शारीरिक शिक्षा के उद्देश्यों में शामिल होनी ही चाहिए। शारीरिक शिक्षा के माध्यम से बच्चे विभिन्न प्रकार की शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने के अवसर प्राप्त करते हैं तथा अवधारणाओं तथा कौशलों को विकसित कर पाते हैं जो उन्हें अपने पसन्द के खेल में हिस्सा लेने तथा अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करता है। यह उन्हें आनन्द तो देता ही है, साथ ही साथ भावी जीवन में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा के लिए भी तैयार करता है। इनके अतिरिक्त शारीरिक शिक्षा, स्वयं के प्रबंधन के कौशलों, सामाजिक तथा सहयोगात्मक कौशलों के विकास का स्वाभाविक मंच तथा अवसर भी प्रदान करता है। खेलकूद बच्चों में चरित्र निर्माण की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। यह अन्य शैक्षिक क्षेत्रों में भी बेहतर परिणामों के लिए वांछित परिस्थितियां तैयार करता है। विशेषकर शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी आदतों के विकास, टीम भावना, लोच तथा संकल्प को दृढता प्रदान करता है। इसलिए, स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा से जुडी गतिविधियों के विद्यालयों में आयोजन का उद्देश्य बच्चों में समझ, नजरिये व पोषण, स्वास्थ्य व स्वच्छता से जुडे व्यवहारों को बेहतर बनाना जाना चाहिए। इनके सफल आयोजन से न केवल व्यक्ति बल्कि परिवार तथा समाज के स्तर पर भी स्वास्थ्य में सुधार तक पहुँचने में सहायता मिलती है। इसके लिए विद्यालय में केवल प्रधानाध्यापक ही नहीं बल्कि सभी शिक्षकों को अपनी समझ स्पष्ट करते हुए वांछित तैयारी करनी होगी। सभी को जहाँ एक ओर अपने कौशलों को विकसित करने के लिए कार्य करना होगा, वहीं दूसरी ओर विद्यालय में इन आयोजनों के लिए विभिन्न संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कार्य करना होगा।

बिहार में खेलकूद तथा शारीरिक शिक्षा के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए, इस पाठ्यक्रम में दो पहलुओं को शामिल किया गया है–

1. विद्यालयों में खेलकूद तथा शारीरिक शिक्षा विषय के क्षेत्र में, समझ तथा व्यवहार में प्रतिमान विस्थापन की आवश्यकता।
2. विद्यालय के संपूर्ण वातावरण का अनुकूलन, जिससे खेलकूद तथा शारीरिक शिक्षा को शिक्षण–अधिगम की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता के रूप में शामिल किया जा सके क्योंकि यह बच्चे के सर्वांगीण विकास में योगदान देता है।

## उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- स्वास्थ्य तथा स्वच्छता की आवधारणा को शारीरिक शिक्षा तथा वर्तमान विद्यालयी वातावरण के संदर्भ में समझ सकेंगे।
- व्यक्तिगत तथा पर्यावरणीय स्वच्छता, साफ–सफाई, प्रदूषण, सामान्य बीमारियों तथा विद्याालय एवं समुदाय में इनके रोकथाम तथा नियंत्रण के उपायों पर चिन्तन कर पाएंगे।
- खेलकूद के माध्यम से बच्चे के सर्वांगीण विकास की अवधारणा को समझ पाएंगे।
- एथेलेटिक क्षमताओं से जुडे गति के मूल सिद्धान्तों तथा मूल कौशलों को जान पाएंगे जो कि विभिन्न खेलकूद तथा विद्यालय में इन कौशलो को छात्रों तक पहुँचाने के लिए आवश्यक है।
- समावेशी खेलकूद तथा खेल आधारित गतिविधियों को पाठ्यचर्या से जोड़ने के लिए वांछित कौशलों तथा तकनीकों का विकास करने में सक्षम हो पाएंगे।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर सुझाए गए मूल योगासनों तथा ध्यान केन्द्रन विधियाँ सीख व समझ पाएंगे
- सीखे गए मूल योगासनों तथा ध्यान केन्द्रन विधियों के माध्यम से छात्रों को शान्त तथा सहज होने के लिए विभिन्न कौशलों को सीखने तथा इनका उपयोग दैनिक जीवन में तनावमुक्त रहने में सहायता प्रदान कर पाएंगे।

# विद्यालय में स्वास्थ्य, योग एवं शारीरिक शिक्षा

पूर्णांक : 100 (40+60) | **S-5** | अध्ययन अवधि : 80 घंटा

**इकाई–1 : शारीरिक शिक्षा की समझ**

- शारीरिक शिक्षा : अवधारणा एवं महत्व
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य से शारीरिक शिक्षा का जुड़ाव :
  - भावनात्मक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य तथा संज्ञान के अंतर्सम्बंधों की समझ
- प्रारम्भिक कक्षा के बच्चों के लिए शारीरिक शिक्षा का समावेशी स्वरूप :
  - बच्चों की विविध क्षमताओं एवं आवश्यकताओं का ध्यान
  - कक्षा, विद्यालय तथा स्थानीय संदर्भ के अनुसार गतिविधियों का समावेशन
- गतिविधियों के दौरान बच्चों का प्रेक्षण (सुपरवाईजिंग) एवं मार्गदर्शन (गाइडिंग)

इस इकाई के अंतर्गत शारीरिक शिक्षा की सामान्य अवधारणा की समझ दी जाएगी। कोशिश हो कि शारीरिक शिक्षा के उन बिन्दुओं की विशेष चर्चा की जाए जो प्रारम्भिक विद्यालय के बच्चों के संदर्भ में उपयोगी हों। शारीरिक शिक्षा की अवधारणात्मक समझ में उसके समावेशी प्रकृति की विशेष चर्चा की जाएगी जो विद्यालय आनेवाले हर बच्चे (लड़का, लड़की, विशेष आवश्यकतावाले बच्चे) को ध्यान में रखता हो। यहां शारीरिक शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम के महत्वपूर्ण हिस्से के तौर पर समझने पर जोर होगा। साथ ही शिक्षकों में यह नज़रिया भी विकसित किया जाएगा कि वे शारीरिक शिक्षा की गतिविधियों में अपनी भूमिका को पहचाने।

**इकाई–2 : खेल एवं खेलकूद**

- खेल एवं खेलकूद : अवधारणा और महत्व (प्रारम्भिक विद्यालयी स्तर के विशेष संदर्भ में)
- खेलकूद के बुनियादी आधार :
  - आनन्द (मजे के लिए)
  - सुरक्षा (सुरक्षित वातावरण, शारीरिक एवं भावनात्मक सुरक्षा)
  - सबकी सहभागिता (लड़के, लड़कियों, विशेष आवश्यकतावाले बच्चों का समावेशन)
  - अनुभव करके सीखना (बच्चों द्वारा स्वयं से खेल के नियमों को समझना, बनाना, आदि)
- प्रारम्भिक विद्यालय के विभिन्न खेलकूद तथा उनका आयोजन :
  - बच्चों द्वारा रोज़ाना खेले जानेवाले स्थानीय रोचक खेल
  - कक्षा के अंदर और विद्यालय प्रांगण में कराए जाने योग्य रोचक खेल
  - एथलेटिक्स, कबड्डी, खो–खो, फुटबॉल, हॉकी, वॉलीबॉल, क्रिकेट, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज आदि आउटडोर व इनडोर खेलों के आयोजन की बुनियादी समझ
- प्रारम्भिक विद्यालय की समयसारणी में खेलकूद का स्थान तथा इसका प्रभावी उपयोग
- चोट एवं जख्म से बचाव तथा प्राथमिक उपचार : फस्ट ऐड सामग्री एवं प्रक्रिया की समझ
- प्रमुख राज्यस्तरीय, राष्ट्रीय एवं अतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों से परिचय

बच्चों के जीवन में खेल का अहम स्थान है, जिसकी अवधारणात्मक समझ तथा बुनियादी आधार इस इकाई के शुरूआत में दी जाएगी। यहां ध्यान देनेवाली बात यह है कि खेल और खेलकूद की दुनिया बहुत बड़ी है, अतः उसके वैसे पहलुओं की चर्चा ही यहां की जाए जो प्रारम्भिक विद्यालय के शिक्षकों एवं बच्चों के लिए उपयोगी हो। खेलकूद बच्चों के सह–शैक्षिक विकास का सूचक भी हो सकता है। विद्यालय में खेलकूद की प्रक्रिया अनौपचारिक तौर पर बच्चों द्वारा निरन्तर चलती रहती है। बहुत छोटे बच्चों के लिए तो पूरी दिनचर्या ही खेल के इर्दगिर्द घूमती रहती है। अतः शिक्षकों को उन खेलों को भी समझने पर जोर देना चाहिए जो बच्चे बहुत रूचि के साथ खेलते हैं। इसके साथ ही, विद्यालयी परिवेश एवं जगह को खेल खेलने लायक तैयार करने की समझ भी उनमें होनी चाहिए ताकि औपचारिक तौर पर भी वे तरह–तरह के खेलों का आयोजन विद्यालय में करा सकें। खेलों के प्रति शिक्षकों को सजग बनाने हेतु कुछ ऐसे राज्यस्तरीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय खेल–आयोजनों से अवगत भी कराया जाएगा ताकि वे अपने विद्यालय के बच्चों की खेल प्रतिभाओं के महत्व तथा उन्हें आगे बढ़ाने के प्रति सचेत प्रयास कर सकें। कोशिश यह हो कि प्रशिक्षु यहां उल्लेखित खेलों को खेलें तथा इनको अपने विद्यालय में आयोजित करें।

**इकाई–3 : विद्यालय में योग**

- योग : अवधारणा एवं महत्व
- प्राणायाम और बुनियादी आसनों की समझ
- प्रारम्भिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए योग गतिविधियों का आयोजन

इस इकाई के अंतर्गत योग की सामान्य अवधारणा पर बात की जाएगी। विशेष तौर पर, यहां योग के वैसे बुनियादी आसनों तथा प्राणायाम की समझ दी जाएगी जो प्रारम्भिक विद्यालय के शिक्षकों एवं बच्चों के लिए उपयोगी हो। विद्यालयी गतिविधि में योग को कहां–कहां शामिल किया जा सकता है, इसकी समझ भी इस इकाई के माध्यम से दी जाएगी। यह एक प्रायोगिक इकाई है, अतः यह अपेक्षा है कि इसके अंतर्गत सीखे गए योग को प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय में प्रशिक्षुओं द्वारा रोजाना किया एवं कराया जाए।

**इकाई–4 : स्वास्थ्य शिक्षा की समझ तथा विद्यालय का संदर्भ**

- स्वास्थ्य शिक्षा की अवधारणात्मक एवं आलोचनात्मक समझ :
  - – व्यवहार परिवर्तन (बिहेवियर चेंज) मॉडल बनाम स्वास्थ संचार (हेल्थ कम्यूनिकेशन) मॉडल
- विद्यालय में स्वास्थ्य शिक्षा से जुडे मुद्दों की पहचान
- पोषण तथा संतुलित आहार की समझ : प्रारम्भिक विद्यालय में आनेवाले बच्चों के विशेष संदर्भ में
- संक्रामक रोगों की समझ तथा उनके रोकथाम की जानकारी
- प्रारम्भिक स्तर के विभिन्न विषयों से स्वास्थ्य शिक्षा के उदाहरणों की समझ तथा उनका सीखने की योजना में समावेश

शारीरिक शिक्षा का जुड़ाव स्वास्थ्य शिक्षा से भी है, जिसकी अवधारणात्मक समझ इस इकाई में दी जाएगी। वर्तमान में स्वास्थ्य की जो अवधारणा समाज में व्याप्त है, उसका आलोचनात्मक अध्ययन विभिन्न मॉडलों के उदारहणों को प्रस्तुत करके किया जाएगा। इकाई के अंतर्गत, पोषण तथा संतुलित आहार की समझ तथा उससे सम्बंधित सामग्रियों को जुटाने के रास्तों पर भी बात की जाएगी। स्वास्थ्य के संदर्भ में संक्रामक रोगों की समझ तथा रोकथाम पर भी बात होगी। कोशिश यह हो कि इन सभी मुद्दों के केन्द्र में बिहार के प्रारम्भिक विद्यालय में आनेवाले बच्चों का पोषण एवं स्वास्थ्य हो।

**इकाई–5 : स्वास्थ्य शिक्षा और विद्यालय**

- विद्यालय का भौतिक वातावरण : शौचालय, जलस्रोत, कचरे का निपटान/प्रबंधन
- विद्यालय में स्वच्छता तथा साफ–सफाई मानकों को सुनिश्चित किए जाने में समुदाय तथा शिक्षकों की भूमिका
- व्यक्तिगत स्वच्छता तथा साफ–सफाई : केस स्टडी से जुड़ी चर्चाओं के माध्यम से बच्चों में हाथ धोने, नहाने, नाखून काटने, साफ कपड़े पहनने जैसी आदतों के विकास के तरीकों को समझना तथा उनका प्रयोग अपने विद्यालय मे करना
- विद्यालय में मिड डे मिल : आधारभूत समझ, सामग्रियों के भंडारण, तैयारी एवं वितरण से सम्बंधित कौशलों का विकास, मिड डे मिल से सम्बंधित केस स्टडिज द्वारा नवाचारी प्रयोगों की समझ
- हेल्थ कार्ड तथा डिवर्मिंग पुस्तिका के उपयोग की समझ
- विद्यालय के शिक्षकों एवं बच्चों द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन

यह इकाई विद्यालय में स्वास्थ्य शिक्षा के कार्यों को प्रयोग में लाने के संदर्भ में है। इकाई–4 के माध्यम से प्रशिक्षुओं ने स्वास्थ्य शिक्षा के जिन पहलुओं का अध्ययन किया, ऐसी अपेक्षा है कि वे उसका प्रयोग अपने विद्यालय और प्रशिक्षण केन्द्र के परिवेश को स्वास्थ्यवर्धक बनाने में करेंगे। अतः यह इकाई, प्रशिक्षुओं में स्वास्थ्य शिक्षा के कौशल विकास एवं उनसे तरह–तरह के कार्यों को अपने विद्यालय तथा प्रशिक्षण केन्द्र पर करने की मांग करती है। यह स्वास्थ्य के प्रति प्रशिक्षुओं को संवेदनशीलता के विकास में मदद करेगी। विद्यालय में उपयोग में लाए जानेवाले स्वास्थ्य सम्बंधी आंकड़ों के संग्रह तथा उनके इस्तेमाल के कौशल को भी प्रशिक्षु यहां सीखेंगे।

**प्रस्तावित कार्य**

- विद्यालय में प्रतिदिन चेतना सत्र में शारीरिक शिक्षा व योग के विभिन्न आसनों को शामिल करने का एक साप्ताहिक समय सारणी बनाएं तथा इसके आधार पर विद्यालय में योग कराएं।
- कक्षा में किसी भी विषय के शिक्षण के पहले किस प्रकार का खेल आधारित गतिविधियां एवं योग कराया जा सकता है जिससे बच्चों में एकाग्रता बढ़ेगी, इसकी जानकारी अपने अन्य शिक्षकों को दें तथा कक्षा में करवाएं।
- अपने विद्यालय में लड़कों तथा लड़कियों, दोनों के लिए शारीरिक शिक्षा को दैनिक समयसारणी में कैसे प्रभावी तौर पर शामिल किया जाए, इसके लिए योजना बताएं।
- व्यवहार परिवर्तन तथा सामुदायिक जागरूकता में खेलों की भूमिका पर एक केस स्टडी तैयार करें।
- पाठ्यचर्या को जोडते हुए STEP विधि के आधार पर नई खेल अधिगम योजनाएं तैयार करें।
- स्थानीय रूप से उपलब्ध आहार की सूची तैयार करें तथा इसमें उनसे प्राप्त होने वाले पोषण संबंधी लाभ का विवरण भी शामिल हो।
- स्वयं के स्वास्थ्य का अध्ययन करने के लिए विभिन्न संकेतकों का निर्माण करें तथा उनके आधार पर अपने स्वास्थ्य की स्थिति का विश्लेषण करें।
- विद्यालय में बच्चों के स्वास्थ्य का अध्ययन करने के लिए एक योजना बनाएं तथा उसके आधार पर उनका अध्ययन करें।
- स्वास्थ्य के प्रति विद्यालय और समुदाय को जागरूक बनाने के लिए एक कार्यक्रम की रूपरेखा बनाएं।

**S-6**

# PEDAGOGY OF ENGLISH (Primary Level)

## Introduction

This course focuses on the teaching of English to learners at the primary level. The aim is to expose the student-teacher to contemporary practices in teaching English as a second language. In the light of NCF 2005 and BCF 2008 the teacher will understand the status of English in India and Bihar. Also, by keeping in mind the utility and importance of psycholinguistic and sociolinguistic approaches to language learning, they will take mother tongue as strength and will feel comfortable in using different communicative strategies to meet their goal . this course also focuses on the use of different methods and approaches through the help of ICT and Activity Based Learning (ABL). The course also offers the space to critique existing classroom methodology for English Language Teaching (ELT). The theoretical perspective of this course is based on the approach to language learning as envisaged in NCF 2005, BCF 2008 and NCTE 2014. The major emphasis is laid on the constructivist class room where the teachers will act as a facilitator and create a learning environment. This course will encourage their learners to experiment with language learning.

## Objectives

The objectives of teaching this subject are:-

- To equip student-teachers with a theoretical perspective on English as a Second Language (ESL)
- Enable student-teachers to grasp general principles in language learning and teaching
- To understand learners and their learning context
- Procedures and techniques for teaching English as a second language
- To use textbook materials for transacting effectively
- To assess learners' learning outcomes

## PEDAGOGY OF ENGLISH (Primary Level)

**Full Marks: 50 (35+15)** | **S-6** | **Study Time: 40 Hrs.**

**Unit–1 : Teaching English as a second language**

- Principles of second language learning
- Factors affecting second language learning : developmental, socio-economic and psychological factors
- Teaching of English at the elementary level with reference to National Curriculum Framework-2005 and Bihar Curriculum Framework-2008
- Understanding the Curriculum-syllabus-textbook of English in Bihar at primary level
- Approaches for teaching of English
  - Behaviourist approach : Grammar Translation Method; Audio-Lingual drill
  - Structural approach
  - Communicative approach
  - Cognitive approach
  - Constructivist approach

All this features of teaching second language will be developed through activities and participation. It can also be developed through listening, speaking, reading and writing. We can develop it with mock situation, through interpretation and linguist competencies. It can we develop through a task based on different approaches of teaching English. Task should be based on dialogue dialing interpretation.

**Unit–2 : Strategies of teaching Language skills : Listening and Speaking**

- **Listening**: sound recognition, pre-listening, while listening and post listening activities, syllable, stress, intonation and rhythm
- **Speaking**: reciting a poem, participating in a dialogue/conversation, greetings, asking and answering questions and conveying information
- Tools and Techniques for assessment
- Learning Plan : Special emphasis on Listening and Speaking
- Learning Indicators for Listening and Speaking

All these features of teaching listening an speaking skills will be developed by activites/task like role plays, interview, oral drill, exercise, speeches, announcements, running dictation(Letters,words,unseen passage), visual oral exercises, recitation, discussions etc.

**Unit–3 : Strategies of teaching Language skills : Reading and Writing**

A. **Reading**: - silent and loud reading, skimming and scanning, pre-reading, while reading and post reading.
 - Learning Indicators for Reading

These reading skills will be developed through language games and with the help of short stories related to their text books. They will also come to know the tools and techniques for assessment and making learning plan for reading skill.

B. **Writing:**

- controlled and guided writing
  - Conveying information (posters, notices, descriptions of places, persons and things)
  - Persuading others (advertisements, articles)
  - Maintaining social relations (invitations, letters, etc.)
  - Writing as a process: brainstorming, mind map, drafting, evaluation, reviewing , editing, final draft
- Free writing
  - Expressing one's feelings and thoughts e.g. diaries, emails, SMS,
- Tools and Techniques for assessment
- Learning Plan; Special emphasis on reading and writing
- Learning Indicators for Writing

The focus will be on developing controlled and guided writing and the free writing too. They will also come to know the tools and techniques for assessment and making learning plan for writing skill.

**Unit–4** : **Teaching vocabulary and grammar in context**

- Strategies for vocabulary teaching based on different parts of speech: word association and formation, word search from a grid, bingo game, antakshari, idioms and their meanings, matching words with their meaning, scrabble, spelling games, dictation, anagrams, scrambling words, cross word puzzles
- Approaches to grammar teaching with emphasis on grammar in context (activities illustrating this approach to be suggested)

The focus will be on building vocabulary through different activities and games related to their text books. Different approaches to grammar teaching in context will also be taken into focus through activities and illustrations.

**Suggestive works**

- Collect as many words of English as you can (but not less than 50 words) which are used by the common people in your locality?
- Have an informal talk with common people and guardians to know their views on the use and importance of English language and prepare a report on it.
- List out the resources for language learning at different levels
- Make a list of words which have different syllables stressed when used as different parts of speech
- Choose two passages – one for evaluating skimming and scanning skills and another for skill of making inferences – and frame questions accordingly.
- List out the problems that your students had in your class and write in detail the measure you took to overcome these problems
- Develop reading material/activities essentially needed for developing listening and speaking skills.
- Collect at least 100 words of English (or as many as possible) that a child knows before coming to school.
- Make a list of words in English where p, r, l, k, d sounds are not pronounced.
- Listen to radio news in English and list some of the important news of the day.
- Make a glossary of homophones.

**S-7**

# गणित का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर)

## संदर्भ

यदि गणित शिक्षण के उद्देश्य में इन सबको और हमारे रोजमर्रा के अनुभवों के साथ संबंध जोड़ने को रखा जाए तो गणित की कक्षा–कक्ष की प्रक्रिया में बहुत बदलाव आएगा। इस पाठ्यक्रम में इन सब पर विमर्श करने का प्रयास है। यह पाठ्यक्रम व पाठ्य सामग्री प्राथमिक स्तर के शिक्षकों में कक्षा शिक्षण के लिए विषयगत तैयारी, विषय की प्रकृति की समझ व बच्चों एवं उनके गणित सीखने की प्रक्रिया की समझ विकसित करेगा। अच्छे शिक्षण के लिए गणित की अवधारणाओं की समझ होनी चाहिए। यह भी पता होना चाहिए कि गणित की प्रकृति क्या है, उसमें ज्ञान को मानने के आधार क्या हैं और बच्चे इसे कैसे सीखते हैं। हाल में हुए शोधों के आधार पर, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 में यह पूरजोर वकालत की गई है कि बच्चे जिज्ञासु होते हैं, लगातार सीखते हैं एवं स्वयं ज्ञान का निर्माण करते हैं। वे स्कूल आने से पहले बहुत कुछ जानते हैं और उन्हें किसी भी हालत में कोरी स्लेट नहीं माना जाना चाहिए। हर बच्चा अपने सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश के कारण कुछ समान गुणों के होते हुए भी अलग है। शिक्षक को बच्चों की बात को समझना व उनकी पृष्ठभूमि को समझकर उनके ज्ञान का कक्षा में उपयोग करना सीखने में कई तरह से मदद करेगा।

## उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- गणित सीखने–सिखाने के तरीकों व उनके अंतर्गत आने वाले विभिन्न पहलुओं को समझना।
- विभिन्न प्रकार की शिक्षण अधिगम सामग्री की आवश्यकता एवं उपयोग को समधान।
- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में योजना को आवश्यक व महत्व को समझना।
- इकाई योजना व सीखने की योजना को समझना।
- आकलन की अवधरणा, इसके विभिन्न तरीकों व मूल्यांकन अधारित उपचारात्मक शिक्षण को समझना।
- प्राथमिक स्तर पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा को समझना।
- ज्यामितीय आकृतियाँ एवं पैटर्न संबंधी अवधरणाओं को समझना।
- भिन्नों की आवश्यकता व उपयोग को समझना।
- भिन्न संख्याओं की संक्रियाएँ को समझना।
- भिन्न के विभिन्न प्रकारों व उन्हे दशमलव में व्यक्त कर उसे दैनिक जीवन में अनुपयोग को समझना।

# गणित का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर)

**पूर्णांक : 50 (35+15)** **S-7** **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

**इकाई–1 : गणित शिक्षण की प्रविधियां एवं संसाधन**

- गणित शिक्षण और रचनावाद
- गणित सिखने का एक संभावित क्रम : अ–भा–चि–प्र
- औपचारिक गणित को ठोस अनुभवों से जोड़कर सिखाना
- खेल–खेल में सीखाना
- दोहराव करके सीखाना
- बच्चे एक दूसरे से सीखते हैं
- गलतियों से सिखते हैं
- गतिविधियों से सीखाना
- गणित की पहेलियां
- खुला प्रश्न एवं समस्याएं
- गणित सीखने–सिखाने के विविध संसाधन

इस इकाई में चर्चा के बिन्दुओं को अन्य इकाइयों में व अगले साल के कार्यक्रम में भी पुनः समझने का मौका होगा। बच्चों के सीखने के तरीके, उनके स्वाभाविक अनुभव उनकी भाषा व उसका गणित सीखने से गहरे संबंध को अहसास, यह संबंध किस प्रकार का असर कक्षा पर डालेगा, यह भी समझने का विषय है। इस इकाई में गणित को संकेतों की भाषा के रूप में देखने का प्रयास करेंगे, इसमें किस प्रकार सीखने वाले कई अड़चने आती हैं, यह देखेंगे। अनुभवों ठोस उदाहरणों के साथ संबंध बना वहाँ से प्रतीकों के इस्तेमाल के साथ कथनों को व्याख्यान करने तक का सफर महत्त्वपूर्ण है और गणित सीखने–सिखाने का हिस्सा है। इस क्रम के क्या चरण हो सकते हैं यह भी देखेंगे। एक और बात जो गणित सीखने के लिए आवश्यक है वह है अभ्यास। अकसर गणित के अभ्यास को यांत्रिक समझा जाता है। इस इकाई में हम कुछ रोचक तरीकों पर विचार करेंगे जिसमें बच्चों को अवधारणा व सवालों में जूझने के कई मौके हों। परन्तु ऐसे मौके जो सिर्फ दोहरान के उबाऊ सवाल न हों। ऐसे मौके जिनमें बच्चे की भागीदारी हो, उसे गलती करने की व उससे सीखने की इजाजत हो, आपस में बातचीत करने एक–दूसरे से सीखने की संभावना हो यह भी इस इकाई में चर्चा का हिस्सा होगा।

**इकाई–2 : गणित में सीखने की योजना और आकलन**

- गणित में सीखने की योजना : योजना क्यों और कैसे बनाएं
- गणित के संदर्भ में सीखने का आकलन : क्यों, क्या और कैसे?
- प्राथमिक स्तर पर गणित के संदर्भ में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन
- कक्षा–कक्ष में प्रयोग में लाये जाने वाली आकलन की कुछ प्रविधियाँ
- गणित में सीखने के संकेतकों की समझ

हम इस इकाई में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा की आवश्यकता पर बात करेंगे। हम यह जानेंगे कि गणित सीखने के दौरान बच्चों की गलतियों के प्रति सकारात्मक तथा सृजनात्मक दृष्टिकोण अपनाना किस प्रकार सीखने–सीखाने की प्रक्रिया में मददगार होता है। हम आकलन के विभिन्न तरीकों व मूल्यांकन आधारित उपचारात्मक शिक्षण रणनीतियों के विकास पर भी विचार करेंगे। साथ ही, इस इकाई के अन्तर्गत हम यह देखेंगे कि कक्षा को योजनाबद्ध किस–किस प्रकार किया जा सकता है, अथवा इसकी आवश्यकता क्यों है। अलग–अलग स्तर पर कक्षा को किस प्रकार से नियोजित कर सकते है, जैसे इकाई व सीखने की योजना बनाने पर बात करेंगे।

**इकाई–3 : ज्यामितीय आकृतियां एवं पैटर्न**

- आकृतियाँ : खुली व बंद, नियमित व अनियमित
- ज्यामिति के अवयवः बिन्दु, रेखा, किरण
- रेखाखंड एवं कोण का प्रत्यय
- द्विविमीय आकृतियों एवं त्रिविमीय वस्तुओं की समझ
- सममित आकृतियाँ
- पैटर्न की अवधारणा

जैसा कि हमने शुरू में कहा था गणित का अर्थ संख्याओं व गणना से अधिक व्यापक है। उसका एक प्रमुख हिस्सा स्थानिक समझ हैं। स्थानिक समझ के अन्तर्गत हम उन सभी पहलूओं पर चर्चा करेंगे जो ज्यामिति, सममिति, स्थानिक निरूपण आदि से व उसके परिवर्तनों से सम्बन्धित है। कौनसी चीज़, कहां मिलेगी, कहां रखनी है, पास से और दूर से कैसी दिखेगी, साइड में, ऊपर से, तिरछे देखने पर, सरकाने पर व घुमाने पर कैसी दिखेगी यह सब इस इकाई के अंतर्गत है। इस इकाई में हम ज्यामितीय आकृतियों एवं पैटर्न संबंधी अवधारणाओं और बच्चों के इन्हें सीखने के चरणों व सीखाने के उपयुक्त मौकों के बारे में चर्चा करेंगे।

**इकाई–4 : भिन्न एवं दशमलव संख्याएँ**

- भिन्नात्मक संख्याओं की समझ एवं दैनिक जीवन में उपयोग
- भिन्न के विभिन्न अर्थ
- भिन्नात्मक संख्याओं पर गणितीय संक्रियाएँ
- दषमलव संख्या एवं दषमलव भिन्न
- दषलमव संख्याओं पर संक्रियाएँ
- इबारती प्रश्न व प्रकार
- दैनिक जीवन में भिन्न व एवं दशमलव भिन्न

इस इकाई में हम दैनिक जीवन के उदहरणों को जोड़ते हुए भिन्नों की आवश्यता, उपयोग एवं विकास के बारे में चर्चा करेंगे। हम यह भी देखेंगे कि भिन्न की समक्ष बनाते समय पूर्ण व हिस्से की अवधरणा और उनका निरूपण की प्रक्रिया का विकास कैसे होता है। भिन्न संख्या का केवल एक अर्थ नहीं होता है इसे समझते हुए विभिन्न अर्थो जैसे – भाग, अनुपात आदि के बारे में समझ बनाएगें। साथ ही, यह सोचेंगे कि इसके पहले पढ़े गए संख्या समुच्चय से, भिन्न संख्याओं की अवधारणा और संक्रियाँए कैसे अलग है। भिन्न सख्या के विभिन्न रूप जैसे उचित, अनुचित व मिश्रित भिन्न को समझना एवं दशमलव में व्यक्त करने की प्रक्रिया को देखेंगे।

## प्रस्तावित कार्य

- विभिन्न प्रत्ययों से संबंधित परिमार्जित शिक्षण अधिगम सामग्री तैयार करें तथा उनका उपयोग कर करें।
- अपने आस पास की वस्तुओं में दिखाई पड़ने वाले ज्यामितीय आकृतियों के संदर्भ में अपने साथियों से बातचात कर सूचीकरण करें समतल एवं ठोस आकृतियों के आधार पर उनका वर्गीकरण करें।
- प्रकृति में विभिन्न वस्तुओं में पायी जाने वाली सममिति को खोजना।
- गणितीय कोना की स्थापना करना।
- अपने परिवेश से विभिन्न गणितीय पहेलियाँ इकठ्ठा करना एवं पहेलियाँ बनाना।
- अपने साथी प्रशिक्षु के कक्षा शिक्षण का विश्लेषणात्मक अवलोकन करना।
- अपने घर से विद्यालय तक जाने का जो नक्शा आपने तैयार किया है उसमें आप और आपके साथियों ने किन–किन प्रतीकों एवं चिह्नों का प्रयोग किया है, उस पर चर्चा कीजिए तथा उसका सूचीकरण कीजिए
- गणित की अवधारणा के विकास के लिए अवधारणा मानचित्रण तैयार करना।
- कक्षा 1 से 5 की पाठ्य पुस्तक के किसी अध्याय से संबंधित विषय–वस्तु का विश्लेषण करना।
- विभिन्न प्रकार के क्षमता वाले बच्चों के अधिगम के लिए सीखने की योजना तैयार करना।
- गणित के विभिन्न प्रत्ययों के अधिगम से संबंधित क्रियात्मक अनुसंधान करना।
- सतत् व व्यापक मूल्यांकन के लिए कुछ क्रियाकलाप तैयार करना।
- किसी कक्षा में बच्चों के अधिगम के आकलन हेतु योजना तैयार करना।
- दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न प्रकार की मापन इकाईयों का अध्ययन तथा उनमें परस्पर संबंध स्थापित करना।
- परिवेश से किसी सूचना के संबंध में आँकडें एकत्र करना तथा उन्हें व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना।
- गणित सबके लिए पर एक रिपोर्ट तैयार करना।

**S-8**

# हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर)

## संदर्भ

प्रारम्भिक शिक्षक की तैयारी को स्कूली पाठ्यक्रम के साथ समन्वय करना समय की माँग है। इनमें से कुछ संदर्भों का अध्ययन आप हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1 में कर चुके हैं। इस भाग में प्रशिक्षु हिन्दी की संरचनागत विशेषताओं के बारे मे समझ बनाएँगे जो विशेषकर पहली से पाँचवी कक्षा के विद्यार्थियों को पढ़ाने में मददगार होंगी। यह विषयपत्र प्रशिक्षुओं की क्षमताओं को इस दिशा में विकसित करने के अवसर प्रदान करता है। प्रशिक्षु लिखने की कुशलताओं और क्षमताओं के बारे में समझ बनाएँगे। वे इस संकल्पना का अर्थ, विकसित होने कि प्रक्रिया तथा कक्षा में उपयोग करने के तरीकों के बारे में समझ बनाएँगे। शिक्षक होने के लिए यह एक अनिवार्य शर्त है कि वे जिन कुशलताओं और क्षमताओं का विकास विद्यार्थियों में करना चाहते/चाहतीं हैं, वे कुशलताएँ और क्षमताएँ स्वयं उनके व्यक्तित्व का हिस्सा हों। इस संदर्भ में यह विषयपत्र प्रशिक्षुओं में संबन्धित कुशलताओं और क्षमताओं के विकास को महत्त्वपूर्ण स्थान देता है। प्रशिक्षुओं को ऐसे अवसर उपलब्ध करवाये जायेंगे जिनकी मदद से वे लिखने की संकल्पना के बारे में बनी समझ को प्रारम्भिक कक्षाओं के बच्चों के लिए उपयुक्त शिक्षण प्रक्रियाओं का सृजन करने में कर सकेंगे। व्याकरण की जड़ अवधारणा की जगह ऐसी गतिशील अवधारणा के रूप में ग्रहण करने का दौर आरम्भ हो चुका है, जिसे संदर्भों में व्याख्यायित किया जाता है। गतिविधि आधारित व्याकरण शिक्षण इसका एक पहलू है। इस पत्र में इसके विभिन्न पहलुओं पर समझ बनायी जाएगी। प्रशिक्षु बच्चों का सतत् एवं समग्र मूल्यांकन करने की प्रक्रिया एवं तरीकों के बारे में समझ बनाएँगे। वे मूल्यांकन के इस उपागम तथा एक–दो बार ली जाने वाली परीक्षा के आधार पर किए जाने वाले मूल्यांकन के बीच शिक्षणशास्त्री अंतर के बारे में समझ बनाएँगे। वे समझ पाएँगे कि मूल्यांकन बच्चों कि गलतियाँ पकड़ने के लिए न करके वैयक्तिक रूप से उनकी मदद करने के लिए किया जाता है।

## उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी–शिक्षण के उद्देश्यों के बारे में समझ बनाना।
- प्रारम्भिक स्तर पर आवश्यक भाषायी कौशलों के लेखन और व्याकरणिक पहलुओं को समझना जो प्रारम्भिक स्तर पर आवश्यक हैं।
- संदर्भ आधारित व्याकरण के महत्व को समझना और उसका हिन्दी शिक्षण में उपयोग करने के कौशल को समझना।
- गतिविधि आधारित व्याकरणिक ज्ञान से परिचित होकर उनका कक्षायी उपयोग करना।
- हिन्दी–भाषा के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के तरीकों से अवगत होना।
- उद्देश्यपरक सीखने की योजना, उपयुक्त कक्षा प्रक्रियाओं के नियोजन तथा संचालन के बारे में समझ विकसित करना।

# हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर)

**पूर्णांक : 50 (35+15)** **S-8** **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

**इकाई–1 : लेखन क्षमता का विकास**

- लेखन का अर्थ : संकल्पना और विकास
- शुरुआती लेखन : संकल्पना और विकास
- लेखन की चरणबद्ध प्रक्रिया : आड़ी–तिरछी रेखाएं, प्रतीकात्मक चित्र, स्व–वर्तनी, पारंपरिक लेखन की ओर
- पढ़ना और लिखना में संबंध
- प्रारम्भिक कक्षाओं में लेखन क्षमता के विकास के तरीके : चित्र बनाना, रेखाचित्र से कहानी बनाकर लिखना, अपनी रुचि की चीजों के बारे में लिखना, कहानी को आगे बढ़ाकर लिखना, श्रुतलेख, लयात्मक शब्द से तुकबंदी करना, पत्र, कहानी, कविता आदि लिखना, विज्ञापन बनाना, विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखना
- लिखना सिखाने में आने वाली समस्याएँ व उनके समाधान के तरीके : क्या ये वास्तव में समस्याएँ है या बच्चों द्वारा सीखने की प्रक्रिया के स्वाभाविक चरण? बच्चों के कार्य पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया का महत्त्व और स्वरूप
- भाषा सीखने के संकेतक : लेखन के संदर्भ में

इस इकाई में प्रशिक्षुओं की लिखने की क्षमता को बढ़ाया जाएगा, लिखना सीखने की समझ विकसित की जाएगी तथा लिखना सीखने में मदद करने वाले तारीकों को क्रियान्वित करने की तत्परता पर भी ध्यान दिया जाएगा। इकाई की शुरूआत में हम लिखने के अर्थ, संकल्पना पर चर्चा करेंगे? लिखना केवल एक प्रकार का माध्यम है जिसमें बोली गई बात को व्यक्त किया जा सकता है? या लिखते वक्त बोलने से कुछ ज्यादा करना पड़ता है? क्यों लिखना सीखना भाषा सीखने का कठिन लक्ष्य माना जाता है। क्या यह वाकई कठिन है अथवा जो तरीके हम लिखना सिखाने हेतु अपनाते हैं वह इसको कठिन बना देते हैं? हम इस पर भी विस्तार से बातचीत करेंगे कि बच्चों के साथ लिखना सिखाने की शुरूआत कैसे की जाए? भाषा लगातार विकसित होती रहती है उसका स्वरूप बदलता रहता है लेकिन लिखित भाषा में परिवर्तन बहुत ही धीरे होता है दूसरा बोलचाल की भाषा में ''भाषा'' के मानकीकृत रूप के उपयोग पर इतना जोर नहीं होता जितना की लिखित भाषा में। बच्चों द्वारा लिखना सीखने की दृष्टि से इसके महत्त्वपूर्ण निहितार्थ है और इस इकाई में हम इन निहितार्थों के बारे में भी चर्चा करेंगे। अच्छे लेखन की विशेषताएँ व प्रारम्भिक कक्षाओं में लेखन कौशल विकास के लिए क्या–क्या अनुभव बच्चों को दिये जा सकते हैं इसके बारे में भी बात की जाएगी।

**इकाई –2 : हिन्दी शिक्षण में सीखने की योजना और कक्षा प्रक्रियाएँ**

- हिन्दी सीखने का अर्थ और इसके लिए सीखने की योजना के प्रमुख बिन्दु
- हिन्दी शिक्षण के लिए सीखने की योजना के प्रमुख प्रकार
- हिन्दी का रचनात्मक शिक्षण और कक्षा प्रक्रियाएं
- हिन्दी शिक्षण हेतु सीखने की योजना की चुनौतियाँ

हिन्दी के प्रभावी शिक्षण के लिए एक विशेष अपेक्षा यह है कि सीखने की योजना को कक्षाकक्ष के बच्चों के के संदर्भ को समझते हुए बनाया जाए। यह इकाई विशेष तौर से उन पहलुओं की चर्चा करगी जो हिन्दी शिक्षण के क्रियान्वयन के लिए बेहद जरूरी हैं। यहां आप हिन्दी विषय में सीखने की योजना के विभिन्न प्रकारों के साथ–साथ इस विषय के संदर्भ में कक्षायी चुनौतियों को समझेंगे।

**इकाई –3 : हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण और वर्तनी**

- भाषा संरचना : वर्ण, शब्द, वाक्य
- संदर्भ आधारित व्याकरण
- गतिविधियां और व्याकरण
- अशुद्धियां और उनका निराकरण
- वर्तनी की अशुद्धियां और निराकरण

भाषा और अभिव्यक्ति की दुनिया में वर्तनी और उच्चारण के संदर्भों की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्याकरण अब कोरे सिद्धांत के रूप में नहीं देखा जाता। उसे संदर्भों में व्याख्यायित कर समझने से, भाषागत प्रयोगों में परिष्कार आता है। इस इकाई में प्राथमिक स्तर की हिन्दी में व्याकरण के विभिन्न संदर्भों को समझने का प्रयास किया जाएगा। रोजमर्रा की जिन्दगी में शुद्ध भाषा एक अनिवार्य सम्बंध है। वर्तनी तथा अन्य अशुद्धियों को समझकर उनके निराकरण के उपायों की चर्चा भी इस इकाई में अपेक्षित है।

**इकाई –4 : हिन्दी शिक्षण में आकलन**

- हिन्दी सीखने के संदर्भ में आकलन का अर्थ :
  सीखने की प्रक्रिया के रूप में, शिक्षार्थी को सीखने में मदद करने के रूप में, शिक्षातंत्र को प्रतिपुष्टि देने के रूप में उत्पाद तथा प्रक्रिया के रूप में,
- हिंदी भाषा में सतत और समग्र आकलन की संकल्पना
- भाषा में आकलन के विभिन्न तरीके : विभिन्न क्षमताओं का मूल्यांकन, मौखिक आकलन, अवलोकन, लिखित आकलन, प्रस्तुति, अभिनय, पोर्टफालियो, जांच सूची, रेटिंग स्केल आदि।
- सीखने के संकेतकों की समझ
- हिन्दी भाषा शिक्षण के आकलन में प्रश्नों की भूमिका

इस इकाई में हम यह समझ बनाने का प्रयास करेंगे कि ''आकलन'' आखिर है क्या? वर्तमान आकलन प्रक्रिया हमें यह तो अवगत कराती है कि बच्चे ने हर विषय में कितने अंक प्राप्त किये हैं? लेकिन ये अंकन न तो यह समझने में मदद करते हैं कि बच्चे ने क्या सीखा है? और न ही यह समझने में कि उसके सीखने की प्रक्रिया क्या है। उसे कहाँ–कहाँ मदद की आवश्यकता है? वर्तमान में प्रचलित मूल्यांकन प्रक्रिया की एक और समस्या है कि यह सिर्फ इस बात का मूल्यांकन करती है कि बच्चे की रटने की क्षमता कितनी है? इन सभी को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन को पुनः परिभाषित करने की जरूरत है। यह इकाई आकलन के उद्देश्य क्या होने चाहिए? आकलन किसका व कब, आकलन कैसे कर सकते हैं ? क्या आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा है? इत्यादि मुद्दों पर विस्तार से चर्चा करते हुए आकलन को पुनः परिभाषित करने में मदद करती है।

**प्रस्तावित कार्य**

- बड़े आकार के दस ऐसे चित्रों का चुनाव कीजिए जिनका उपयोग पहली इसकी कक्षा के विद्यार्थियों को बातचीत के अवसर उपलब्ध करवाने हेतु किया जा सकता है। प्रत्येक चित्र के साथ उसके चुनाव के कारण देते हुए फाइल तैयार कीजिए।
- चौथी या पाँचवी के एक विद्यार्थी को एक परिचित विषय तथा एक कम परिचित विषय पर लिखने को कहें। उसके लिखे का विश्लेषणा कर यह पता लगाए कि लिखने में कौन–सी बातें मदद करती हैं?
- अपने विद्यालय की किसी एक कक्षा का चयन करें तथा उस कक्षा के विद्यार्थियों की लेखन क्षमता का विश्लेषण करने के लिए आंकड़े एकत्र करें तथा उनका विश्लेषण करके रिपोर्ट बनाएं। अपने रिपोर्ट में मौलिक आंकड़ों को भी व्यवस्थित तरीके से संलग्न करें।
- प्राथमिक कक्षाओं के किसी भी हिंदी पाठ्यपुस्तक के किसी एक पाठ की शिक्षण सहयोग संदर्शिका विकसित करें।
- आपके विद्यालय के अन्य शिक्षकों का बच्चों के शुरूआती लेखन को लेकर क्या समझ है, इसका विश्लेषण करें।

# S-9

# उच्च–प्राथमिक स्तर (कक्षा 6–8) के लिए इनमें से किसी एक विषय का शिक्षणशास्त्र

| | |
|---|---|
| **S-9.A** | गणित का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर) |
| **S-9.B** | विज्ञान का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर) |
| **S-9.C** | सामाजिक विज्ञान का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर) |
| **S-9.D** | Pedagogy of English (Upper Primary level) |
| **S-9.E** | हिन्दी का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर) |
| **S-9.F** | संस्कृत का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर) |
| **S-9.G** | मैथिली का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर) |
| **S-9.H** | बांगला का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर) |
| **S-9.I** | उर्दू का शिक्षणशास्त्र (उच्च–प्राथमिक स्तर) |

**S-9.A**

# गणित का शिक्षणशास्त्र (उच्च प्राथमिक स्तर)

## संदर्भ

हमने पिछले सत्रों में गणित क्यों, कैसे, किसके लिए व इसकी प्रकृति के बारे में चर्चा की थी। गणित का व्यापक स्वरूप छोटे में काफी कुछ व्यक्त कर देता है और गणित के विभिन्न अलग–अलग हिस्से में पारस्परिक गहरे संबंध हैं इस बात को समझेंगे। अक्सर गणित को छोटे–छोटे अवयवों में बांट कर सवाल हल करने के सूत्रों में बदल दिया जाता है। इन इकाइयों में हम इससे बचते हुए इन धारणाओं के बुनियादी जुड़ाव का अहसास करेंगे।

गणित के व्यापक स्वरूप को सीखने के लिए बहुत सी धारणाएं जरूरी हैं। यह धारणाएं संख्या, आकृति आदि की तरह स्पष्ट प्रकट और ठोस रूप नहीं रखती। गणित में प्रतीकों का उपयोग व उनके माध्यम से नए गणितीय कथन बना पाने के लिए बुनियादी तत्वों की पकड़ आवश्यक है।

अमूर्त्त व अपरिचित परिस्थितियों में उपयोग के चलते यह भी आवश्यक हो जाता है कि सीखने–सिखाने का ढंग ऐसा हो जिसमें सीखने वाला तल्लीनता से संलग्न हो। तल्लीनता से संलग्न होने के लिए कक्षा की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होने के गुणों का विवेचन भी हम करेंगे। अक्सर इस प्रक्रिया के बारे में कई भ्रम हैं और कक्षा प्रक्रिया कैसी हो इसकी समझ कुछ शब्दों में अटक जाती है। ये शब्द हैं बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित, बच्चे द्वारा ज्ञान की रचना करना आदि। इन शब्दों को अर्थपूर्ण बनाने व सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझ पाने का प्रयास भी करेंगे और इस समझ के आधार पर गणित की कक्षा के लिए सीखने की योजना बनाने का अभ्यास करेंगे।

## उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- संख्या, संख्या प्रणाली व ज्यामिति आदि प्रत्ययों का विकास करना।
- विभिन्न गणितीय संक्रियाएं व उनके परस्पर संबंधों को समझना।
- अक्षर संख्या तथा पद की समझ और एक या दो अक्षर संख्या वाले बीजीय व्यंजकों के निर्माण व मौलिक संक्रियाओं का विकास करना।
- वास्तविक परिस्थितियों का बीजगणितीय कथन व परिवर्तन का ज्ञान कराना।
- ज्यामितीय शिक्षण में दो या तीन विमाओं वाली आकृति की समझ व निर्माण का ज्ञान कराना।
- विभिन्न आकृतियों के ज्यामितीय निहितार्थों की समझ विकसित करना।
- आँकड़ों का प्रत्यय, एकत्रीकरण व विश्लेषण की प्रक्रिया को समझना।
- प्रारम्भिक सांख्यिकीय प्रविधियों के उपयोग के बारे में ज्ञान देना।
- औपचारिक गणित को बच्चों तक संप्रेषित करने के लिए वांछित प्रक्रिया अपनाने हेतु शिक्षकों का क्षमतावर्द्धन करना।

# गणित का शिक्षणशास्त्र (उच्च प्राथमिक स्तर)

**पूर्णांक : 50 (35+15)** **S-9.A** **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

**इकाई–1 : उच्च–प्राथमिक स्तर पर गणित के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम**

- उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित सीखने के उद्देश्य
- उच्च प्राथमिक स्तर के लिए गणित का पाठ्यक्रम तथा उसका आधार
- उच्च प्राथमिक स्तर की गणित की पाठ्यपुस्तकों की समझ
- उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण, मूल्यांकन, सीखने के संकेतक तथा सीखने की योजना

उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण के शिक्षकों को गणित के उददृश्यों की समझ आवश्यक है। इसी उददेश्य को लेकर उच्च प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम के आधार एवं पाठ्यक्रमों की चर्चा करते हुए इस स्तर पर गणित शिक्षण, मूल्यांकन एवं सीखने की योजना पर भी बात की गई है।

**इकाई–2 : संख्या प्रणाली, संख्याओं की तुलना और बीजगणित का शिक्षण**

- **संख्या प्रणाली :** – प्राकृत संख्या से वास्तविक संख्या तक विकास
  – पूर्णांक
  – परिमेय तथा अपरिमेय संख्याएँ
  – वास्तविक संख्याओं पर संक्रियाएँ
  – संख्याओं का संख्या रेखा पर निरूपण
  – संख्या समूहों के गुण
- **संख्याओं की तुलना :** ऐकिक नियम, अनुपात और समानुपात, प्रतिशतता, प्रतिशत द्वारा संख्याओं की तुलना, ब्याज, चक्रवृद्धि ब्याज,बट्टा, कर, राशियों की तुलना का व्यापक रूप व उसे गणितीय भाषा में व्यक्त करना
- **बीजगणित :** – बीजगणित का जीवन में उपयोग
  – अंक गणित से बीज गणित की ओर
  – गणितीय संबंध फलन व समीकरण
  – बीजीय व्यंजक, बहुपद और उनके शून्यक
- बच्चों की सामान्य गलतियाँ व सोचने का तरीका
- सिखाने के लिए रोचक कक्षा प्रक्रिया/गतिविधियाँ तथा सीखने की योजना

पहले वर्ष में की गई संख्या की अवधारणा की चर्चा को आगे बढ़ाते हुए, इस इकाई में विभिन्न संख्याओं जैसे प्राकृत संख्याओं, पूर्ण संख्याओं, पूर्णांकों, परिमेय संख्याओं, अपरिमेय तथा वास्तविक संख्याओं के समुच्चय की अवधारणा, विकास और संख्या रेखा पर निरूपण को समझेंगे। क्योंकि यह संख्या तक अवधारणा बच्चों में अमूर्त्त सोच का विकास करती है। इसलिए हम यह भी देखेंगे कि संख्या संक्रियाओं के बारे में गणितीय ढ़ग से कैसे सोचा जा सकता है। अंकगणित का व्यापक स्वरूप बीजगणित है। इसमें कुछ चिह्नों का उपयोग करके कई गुणों को प्रदर्शित किया जा सकता है। बच्चों को अक्सर सामान्यीकरण की प्रक्रिया में इसे व्यक्त करने व उसके लिए स्वरूप को समझने में कठिनाई होती है। निश्चित संख्या में अक्षर संख्या और फिर चर तक पहुंचने के कई पड़ाव हैं। इस इकाई में हम इन पर चर्चा करेंगे।

समीकरण का उपयोग हम आम जीवन में अनौपचारिक रूप से करते रहते हैं। इस तरह की परिस्थितियों में उत्तर तक पहुंचने के अलग–अलग रास्ते हम खोजते रहते हैं। इस इकाई के माध्यम से हम, इन आम जीवन की परिस्थितियों को समझ कर समीकरण बनाना सीखेंगे ताकि हल करने के साथ–साथ हम उन परिस्थिति के स्वरूप को समझ पाएं। साथ ही, बच्चों की दिक्कतों व दैनिक जीवन में सामान्यीकरण के उदाहरण खोजने के मौके देने व बनाने के बारे में भी अभ्यास करेंगे। अक्सर ब्याज, कमीशन व गति–समय, नक्शे की स्केलिंग, प्रतिशत, तुलना आदि सभी एक समान गणितीय अवधारणा पर आधारित हैं। यह अवधारणा है अनुपात की। इसी अनुपात से ऐकिक नियम बना है। हम इस आधारभूत बात को समझने का प्रयास करेंगे व इनके उदाहरण दैनिक जीवन में ढूंढेंगे।

**इकाई–3 : जगह की समझ और ज्यामिति शिक्षण**

- आकृतियों में सममिति, सर्वांगसमता, समरूपता
- सतह का क्षेत्रफल, आयतन और उसका संरक्षण
- ज्यामितीय रचना के निहितार्थ व ज्यामितीय आकृतियों के गुण
- त्रिविम को द्विविम पर दर्शाना
- बच्चों की सामान्य गलतियाँ व सोचने का तरीका
- सिखाने के लिए रोचक कक्षा प्रक्रिया/गतिविधियाँ तथा सीखने की योजना

ज्यामिति के विभिन्न अवधारणाओं को समझेंगे तथा यह जानेंगे कि बच्चे इन्हें किस तरह से समझते हैं। बच्चों के लिए स्थान व ज्यामिति अवधारणाओं सम्बन्धी कौशल जैसे दृष्टिकोण व निरूपण को विकसित करना अवधारणाओं की समझ बनाने में मददगार होती है। हम इनके इस्तेमाल से, जैसे नक्शा बनाना आदि अवधारणाओं को विकसित करते हैं। यह गणितीय अवधारणाओं जैसे विभिन्न आकृति में समरूपता, सर्वांगसमता, सममिति देखने व विभिन्न आकृतियों की समझ बनाने में मदद करती है।

**इकाई–4 : आँकड़ों का प्रबंधन एवं संभावना**

- आँकड़ों का उपयोग
- वर्गीकृत व अवर्गीकृत आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण
- केन्द्रीय प्रवृति की समझ
- मान पता करना व दैनिक परिस्थितियों में उपयोग
- बच्चों की संभावना के बारे में समझ
- संभावना से प्रायिकता

आँकड़ों से हर किसी को जीवन में पाला पड़ता ही है। आँकड़ों को व्यवस्थित रूप से जमाना व उनकी मदद से निष्कर्ष तक पहुँचना जीवनपयोगी कौशल है। इस इकाई में हम आँकड़ों के प्रबंधन पर बात करेंगे जिसमें आँकड़ों के एकत्रीकरण, वर्गीकरण व निरूपण को समझेंगे। हम आँकड़ों के विभिन्न प्रकार से प्रस्तुतीकरण के तरीकों व उनके उपयोग को भी जानेंगे। साथ ही केन्द्रीय प्रवृतियों के दैनिक जीवन में उपयोग को भी ढूँढने का प्रयास करेंगे। बच्चे की आँकड़ों व सम्भावनाओं संबंधित अवधारणाओं व कौशलों को विकसित करने पर भी विचार करेंगे।

**प्रस्तावित कार्य**

- प्राचीन सभ्यता में संख्या विकास एवं संख्या निरुपण के तरीकों का अध्ययन करना।
- दैनिक जीवन से जुड़े विभिन्न प्रकार के पैटर्न को ढूंढना व नये प्रकार के गणितीय पैटर्न बनाना।
- ज्यामितीय आकृतियों के चित्रात्मक प्रदर्शन संबंधी चार्ट/कार्ड तैयार करना।
- परिवेश से विभिन्न गणितीय पहेलियाँ इकठ्ठा करना एवं पहेलियाँ बनाना।
- विभिन्न प्रकार के क्षमता वाले बच्चों के लिए सीखने की योजना तैयार करना।
- ऐसी पहेलियों की पहचान करना जिसके हल के लिए बीजगणित की आवश्यकता हो।
- प्रारंभिक स्तर के गणित की कोई दो पाठ्य पुस्तकों (भिन्न राज्य) की समीक्षा/तुलना करना।
- गणित के विभिन्न प्रत्ययों के अधिगम से संबंधित क्रियात्मक अनुसंधान करना।
- कुछ गणितीय कथनों की सत्यता एवं असत्यता जाँचना।
- दैनिक जीवन में माध्य, माध्यिका एवं बहुलक के उदाहरणों की सूची तैयार करना।
- कुछ पैटर्न बनाकर उनका सामान्यीकरण करना।
- प्रारंभिक स्तर पर गणित के किन्हीं दो प्रकरणों हेतु गतिविधियां तैयार करना।
- गणित की अवधारणाओं को सिखाने के दौरान आने वाली दिक्कतों की सूची तैयार करना एवं इनको दूर करने के तरीके सुझाना।
- किसी क्षेत्र जैसे विद्यालय से घर या मोहल्ले का नक्शा तैयार करना।

**S-9.B**

# विज्ञान का शिक्षणशास्त्र

## संदर्भ

विज्ञान की प्रकृति बहुआयामी है। यह विविध अवधारणाओं का समुच्चय है। अतः विज्ञान को एक परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता है। विज्ञान एवं विज्ञान की अवधारणाएँ निरन्तर विकासशील हैं। इसमें समय–समय पर नये नियम सार्वभौम सत्य की तरह स्थापित होते रहते हैं तथा पूर्व स्थापित नियमों में भी समय–समय पर बदलाव होता रहता है। विज्ञान किसी नियम या सिद्धांत तक ही सीमित नहीं है वरन् इसके आगे यह प्रक्रिया आधारित, खोजपरक एवं जिज्ञासु दृष्टिकोण है। यह युक्तिपूर्ण, क्रमबद्ध एवं सुसंगत समझ है जो सृजनशीलता एवं रचनात्मकता के साथ अभिव्यक्त होती है।

विज्ञान को परिभाषित करते समय प्रायः लोग विज्ञान की खोजों और तकनीकी उपलब्धियों के संग्रहण तक ही सीमित कर देते हैं। विज्ञान की कक्षाओं में भी इसी नजरिए पर जोर होता है और उसमें विज्ञान के सिद्धांतों को रटना ही एक मुख्य काम होता है। हजारों वर्षों में हुई असंख्य खोजों को तथ्यों और आँकड़ों में विज्ञान ने संजोया है। अतः ये तथ्य और आँकड़े तो महत्त्वपूर्ण है पर उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है वह प्रक्रिया समझना जिसकी बदौलत इस ज्ञान को हासिल कर पाना संभव हो पाया।

वास्तव में विज्ञान एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम विभिन्न घटनाओं की व्याख्या कर पाते हैं। विज्ञान सोचने का एक तरीका है जिसके माध्यम से प्रकृति या किसी घटना के होने के कारण–प्रभाव संबंध को समझ कर उसकी व्याख्या की जा सकती है। विज्ञान को संज्ञा की बजाय एक क्रिया के रूप में देखना चाहिए। विज्ञान में उत्पाद के रूप में सामने आए सिद्धांत महत्त्वपूर्ण है परन्तु उस सिद्धांत की खोज की प्रक्रिया की समझ के अभाव में वे सिद्धांत अर्थहीन हो जाते हैं। विज्ञान सोचने और सक्रिय होने का तरीका है। एक ऐसा तरीका जिससे सोचने की क्षमता विकसित हो।

पाठ्यक्रम को बनाने के दौरान इस बात का ध्यान रखा गया है कि बच्चों को विभिन्न प्रक्रिया–कौशलों यथा अवलोकन, वर्गीकरण, आँकड़े एकत्रित करना, विश्लेषण करना, निष्कर्ष निकालना आदि के पर्याप्त अवसर मिले। इसके अलावा विभिन्न विधियों, सर्वेक्षण, प्रयोग, चर्चा–परिचर्चा, समूहों में काम करना आदि का भी समावेश किया गया है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए इस खण्ड को चार इकाइयों में बाँटा गया है।

इकाई प्रथम एक मौलिक इकाई है जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 व बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 में विज्ञान शिक्षण की समझ व विज्ञान पाठ्यक्रम के ढाँचे को समझने का प्रयास किया गया है। अन्य इकाइयों में पाठ्यक्रम की चयनित थीमों (प्रकरणों यथा–भोजन, पदार्थ/वस्तुएं, सजीवों का संसार, गतिमान वस्तुएं, लोग एवं विचार, वस्तुएं कैसे कार्य करती हैं, प्राकृतिक परिघटनाएं और प्राकृतिक संसाधन) को लेकर शिक्षण–अधिगम की विषयवस्तु एवं प्रक्रिया दोनों की समझ बनाने का प्रयास है। अध्ययन के उपरांत जब प्रशिक्षु शिक्षक की भूमिका में होंगे, तब अपने विषय की अवधारणात्मक समझ उनके लिये सहायक सिद्ध होगी।

विज्ञान शिक्षण के कई उद्देश्यों में से एक उद्देश्य है बच्चों को विज्ञान की प्रकृति के बारे में अवगत करवाना। बालमन की स्वाभाविक जिज्ञासु प्रवृत्ति को विज्ञान शिक्षण द्वारा न केवल संरक्षित किया जाना चाहिए अपितु

उनमें खोजी प्रवृत्ति को और विकसित किया जाना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन विषय के अन्तर्गत इस बात पर ज्यादा जोर दिया जाता है कि अपने परिवेश जनित जिज्ञासा व प्रश्नों की जाँच करते हुए बच्चे विभिन्न प्रक्रिया–कौशलों को विकसित कर पाए। साथ ही इन कौशलों की मदद से वे अपने परिवेश को और गहराई से जानने का प्रयास कर सके।

उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण से यह अपेक्षा की जाती है कि बच्चों में प्रक्रिया–कौशलों के उत्तरोतर विकास के साथ–साथ अवधारणाओं, सिद्धांतों व वैज्ञानिक व्याख्याओं की समझ विकसित हो। साथ ही वे यह भी अनुभव कर सकें कि इन सब का किस तरह खोज व विकास हुआ। इस प्रक्रिया में उपकरण निर्माण व प्रयोग की बुनियादी व महत्त्वपूर्ण भूमिका का भी उन्हें आभास कराना एक प्रमुख उद्देश्य है।

संक्षेप में कहें तो विज्ञान की प्रकृति व प्रक्रिया पर समझ बनने के बाद ही शिक्षक–प्रशिक्षु एक अच्छी विज्ञान कक्षा के निर्माण की ओर अग्रसर हो पाएंगे। एक अच्छी विज्ञान कक्षा का एक महत्त्वपूर्ण पहलू बच्चों की समझ के आधारों को पहचानना भी है। इन सभी बातों पर गहराई से चर्चा करने से वे यह समझ पाने में सक्षम हो पाएंगे कि एक अच्छी विज्ञान कक्षा के निर्माण में उनकी स्वयं की भूमिका क्या होगी।

## उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- विज्ञान की प्रकृति पर समझ बनाना।
- विज्ञान से हमारा जीवन व परिवेश किस तरह से जुड़ा हुआ है इस बात को समझ पाना।
- यह समझना कि विज्ञान सीखने से हमारा क्या मतलब है।
- विज्ञान के अध्ययन–अध्यापन में सूचना और ज्ञान के अन्तर को समझना।
- बच्चों की पृष्ठभूमि, प्रकृति व विभिन्न घटनाओं के प्रति नजरिए को समझना।
- हम कक्षाओं की रचना किस प्रकार करें कि सभी बच्चे अच्छी तरह सीख सकें। इसमें सीखने की प्रक्रिया की समझ भी निहित है।
- एक विज्ञान शिक्षक होने के नाते अपनी भूमिका को समझ पाना।
- विज्ञान की शिक्षण–विधियों एवं मूल्यांकन–प्रक्रिया की समझ विकसित करना।
- स्थानीय परिवेश, वहाँ के जैविक–अजैविक संसाधन एवं बाल मन की धारणाओं को, विज्ञान अध्ययन–अध्यापन का स्रोत होने की समझ विकसित करना।
- कक्षा–6 से 8 के विज्ञान पाठ्यक्रम से अवगत होना।
- अवधारणाओं के विकास में क्रम की समझ के आधार पर अवधारणा मानचित्रण को समझना।
- प्रायोगिक अनुभव में सिद्धांत निर्माण की प्रक्रिया की समझ बनाना।
- प्रायोगिक कौशल व अपने हाथ से कार्य की प्रवृत्ति का विकास करना।
- विज्ञान पाठ्यक्रम के संदर्भ में मूल्यांकन विधियों का विकास करना।

# विज्ञान का शिक्षणशास्त्र

**पूर्णांक : 50 (35+15)** | **S-9.B** | **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

**इकाई–1 : विज्ञान की समझ**

- विज्ञान से हमारा रिश्ता :
  - विज्ञान की बुनियाद–जिज्ञासा एवं शंका
  - विज्ञान एक जाँच पड़ताल : हमारे आसपास प्रकृति में होनेवाली घटनाओं और परिघटना की व्यवस्थित जाँच–पड़तालकर सिद्धांत विकसित करना एवं उनकी व्याख्या।
  - विकसित सिद्धांतों की प्रयोग एवं अवलोकन द्वारा जाँच पड़ताल, पुष्टि एवं सुधार।
  - जड़ विचारों से मुक्ति एवं प्रगतिशील विचारों की ओर बढ़ना
  - विज्ञान के बढ़ते ज्ञान की सहायता से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी तकनीकी का उत्तरोत्तर विकास जैसे कृषि, चिकित्सा, संचार, उद्योग आदि की समझ
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 व बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 में विज्ञान की समझ

इस इकाई के माध्यम से विज्ञान की आवश्यकता, उसका महत्त्व, विज्ञान की प्रकृति एवं क्षेत्र के प्रति प्रशिक्षुओं में समझ विकसित की जाएगी। इस इकाई में विज्ञान विषय को लेकर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 में कही गई बातों को विभिन्न उदाहरणों द्वारा समझाने का प्रयास किया जाएगा। ये उदाहरण पाठ्यपुस्तक में वर्णित विभिन्न अध्यायों से लिये जाएंगे जिससे कि शिक्षक–प्रशिक्षु की विज्ञान पाठ्यक्रम के ढाँचे के साथ–साथ पाठ्यपुस्तक से इसके जुड़ाव की भी समझ बन पाए। इसके साथ ही पाठ्यक्रम में प्रकरण (थीम) आधारित उपागम का महत्त्व समझ पाएंगे। इस उपागम के माध्यम से वे स्वयं व विद्यार्थी विज्ञान का जुड़ाव दैनिक जीवन की घटनाओं व परिघटनाओं के माध्यम से कर पाएंगे। विभिन्न प्रकरणों की समग्रता व उनमें आपसी जुड़ाव पर समझ बनाना भी इस इकाई का एक प्रमुख उद्देश्य होगा।

**इकाई–2 : विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य**

- वस्तुओं, तथ्यों, घटनाओं, नियमों, सिद्धांतों के कार्य–कारण को समझना
- विज्ञान की प्रक्रिया– अवलोकन, संकलन, वर्गीकरण, परिकल्पना, प्रयोग, निष्कर्ष सत्यापन या परीक्षण को समझना
- आसपास की परिघटनाओं को वैज्ञानिक दृष्टि से समझना
- मन में उठनेवाली जिज्ञासा, वैज्ञानिक चेतना, वैज्ञानिक चिंतन, वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं सृजनशीलता के लिये खोज करना
- अंधविश्वासों और पूर्वाग्रहों से मुक्त करना और समाजोपयोगी इंसान बनाना
- अधिकतम संभव आयामों या तरीकों से किसी तथ्य/घटना को समझना
- खोज–परक, जिज्ञासापरक एवं युक्तिपूर्ण समाज विकसित कराना
- स्वस्थ समालोचनात्मक सोच एवं खुले दिमाग से सोचने की प्रवृत्ति जगाना

- अपने अनुभवों को समूह के अनुभवों से जोड़ना तथा किसी तथ्य या घटना से संबंधित अवधारणात्मक कौशल का विकास कराना
- विज्ञान को जीवन से जोड़ना और विज्ञान की सर्वव्यापकता को समझना
- बच्चों में वैचारिक स्तर पर लचीलापन, नवाचार एवं रचनात्मकता जैसी प्रमुख अभिवृत्तियों का विकास करना
- शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति में विज्ञान शिक्षण में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं की भूमिका को समझना

इस इकाई के माध्यम से प्रशिक्षुओं में विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों की समझ विकसित की जाएगी। जैसेकि विज्ञान हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है जिससे हमारा गहरा रिश्ता है। अतः विभिन्न वस्तुओं, घटनाओं, नियमों, सिद्धांतो के कार्य–कारण सम्बंध के साथ–साथ विज्ञान के प्रक्रिया की भूमिका की समझ विकसित की जाएगी। पुनः विभिन्न तथ्यों से सम्बंधित अवधारणात्मक कौशलों का विकास तथा विज्ञान की सर्वव्यापकता को समझने का प्रयास किया जाएगा।

**इकाई–3 : विज्ञान पाठ्यक्रम के अवधारणात्मक आधार**

- पाठ्यक्रम के आधारभूत सात थीम व उनके प्रमुख अवधारणात्मक स्तम्भ व सवाल
- प्रश्नों में छिपे प्रश्न पहचानते हुए आधारभूत समझ की ओर बढ़ना
- प्रश्नों के उत्तर खोजने में प्रयोग एवं सैद्धांतिक समझ का समावेश
- अवधारणा मानचित्रण की सहायता से प्रत्येक थीम व उससे सम्बंधित विषयवस्तु को समझना
- प्रमुख सिद्धांतों व अवधारणाओं के विकासक्रम को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझना

इस इकाई में प्रशिक्षुओं को विज्ञान पाठ्यक्रम के सात आधारभूत थीम एवं सम्बंधित प्रमुख अवधारणाओं की समझ विकसित करने का प्रयास किया जाएगा। विभिन्न थीमों में समाहित अवधारणाओं के मानचित्रण के माध्यम से सम्बंधित विषयवस्तु की समझ और उनके विकासक्रम के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की समझ विकसित की जाएगी। साथ ही, विज्ञान की प्रकृति के अनुरूप प्रश्न, उनके छिपे प्रश्न तथा उनके उत्तरों को खोजने में प्रयोग एवं सैद्धांतिक समझ को समावेश करने की तकनीक एवं प्रक्रिया की समझ विकसित की जाएगी।

**इकाई–4 : विज्ञान कक्षा में शिक्षण विधियाँ, तकनीकी व मूल्यांकन**

- प्रयोग विधि, प्रदर्शन विधि, परियोजना (प्रोजेक्ट) विधि, सर्वेक्षण विधि, समस्या–समाधन विधि
- अवलोकन, प्रदर्शन, गोष्ठी, चर्चा, स्थानीय भ्रमण, सहभागी–अनुभव, नमूना संग्रह
- विज्ञान शिक्षण में आई०सी०टी० का उपयोग
- कक्षा 6 से 8 तक की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में दिये गये क्रियाकलाप आधारित– यथा केलिडोस्कोप बनाना, पिन होल केमरा बनाना, मोटर बनाना, चुम्बक बनाना
- विज्ञान शिक्षण में मूल्यांकन एवं आकलन – अवधारणा व उद्देश्य
  - सतत् व व्यापक मूल्यांकन के साधन व तकनीक
  - प्रयोग एवं अवलोकन के बुनियादी महत्त्व के आलोक में बच्चों के प्रयोग एवं अवलोकन सम्बंधी कौशलों का आकलन

इस इकाई में प्रशिक्षुओं में विज्ञान की प्रकृति के आलोक में विज्ञान कक्षा में प्रयुक्त की जा सकनेवाली विधियों, तकनीक एवं मूल्यांकन के तरीकों की समझ विकसित करने का प्रयास किया जाएगा। कक्षा–6 से 8 तक की विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में दिए गए क्रियाकलाप–आधारित उपकरणों को बनाने और उनके उपयोग की समझ विकसित की जाएगी। साथ ही, विज्ञान की कक्षाओं को और भी रोचक और जीवन्त बनाने के दृष्टिकोण से आई.सी.टी. के प्रयोग की समझ विकसित की जाएगी। सतत और व्यापक मूल्यांकन और मूल्यांकन के साधन और तकनीकों की समझ विकसित की जाएगी।

**प्रस्तावित कार्य**

- विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का प्रशिक्षुओं द्वारा समालोचनात्मक विश्लेषण करना।
- पाठ्यक्रम में दी गयी विज्ञान के उद्देश्यों की सार्थकता एवं व्यवहारपरकता पर परिचर्चा।
- अलग–अलग परिवेशों के मूल अंतरों को विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए गतिविधियों का निर्माण। (वर्तमान पाठ्यपुस्तक के चुने हुए पाठों का प्रयोग करते हुए)।
- विभिन्न गतिविधियों की सूची का निर्माण तथा विभिन्न विषय–वस्तुओं के शिक्षण के लिए उनके अनुरूप उपयुक्त शिक्षण–विधि की रूपरेखा का निर्माण।
- प्रशिक्षुओं द्वारा विज्ञान की विषयवस्तुओं को स्वयं कैसे नियोजित करतें हैं तथा उनके द्वारा नियोजित विषय–वस्तु के पीछे उनके तार्किक आधारों की सूची बनवाना।
- स्थानीय संसाधनों का प्रशिक्षुओं द्वारा विज्ञान के शिक्षण में प्रयोग पर एक रिपोर्ट बनवाना।
- प्रशिक्षुओं द्वारा विद्यार्थियों की गतिविधियों का अवलोकन तथा उस अवलोकन के आधार पर मूल्यांकन के मापदण्डों को निर्धारित करने के तरीके पर चर्चा कराना।
- बच्चों से बातचीत कर पता लगाइए कि उनके मन में विज्ञान से संबंधित क्या जिज्ञासाएँ/सवाल हैं? उनके साथ हुई बातचीत का विश्लेषण पर एक रिपोर्ट तैयार करवाना।

**S-9.C**

# सामाजिक विज्ञान का शिक्षणशास्त्र

## संदर्भ

सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत समाज के विविध सरोकार आते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर, सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र से मिलती है। सामाजिक विज्ञान की भूमिका एक समतामूलक और शांतिमूलक समाज का ज्ञान–आधार तैयार करने के दृष्टिकोण से बहुत अहम है। सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु का लक्ष्य जानी–पहचानी सामाजिक सच्चाई की समीक्षात्मक जाँच तथा उस पर प्रश्न करते हुए विद्यार्थियों में आलोचनात्मक जागरूकता का संवर्धन करना है। साथ ही, इस विषय में विद्यार्थियों के अपने जीवन–संदर्भों के संबंध में नए आयामों और नए पहलुओं को समझने का भरपूर अवसर है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 ने सामाजिक विज्ञान को समाज में स्वतंत्रता, विश्वास, परस्पर सम्मान और विविधता के आदर जैसे मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ आधार तैयार करने का ज्ञानस्रोत माना है। अतः सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का लक्ष्य विद्यार्थियों में आलोचनात्मक, मानसिक और नैतिक क्षमता का विकास करना है, ताकि वे उन सामाजिक शक्तियों से सावधान रह सकें जो इन मूल्यों को खतरा पहुँचाती हैं। इन सब बातों की समझ प्रशिक्षुओं को होनी चाहिए ताकि वे सामाजिक विज्ञान के शिक्षण को सार्थक रूप से कर सकें। बिहार के कक्षा–6 से 8 के सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम को अंतराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संदर्भ के अपेक्षित ज्ञानक्षेत्र के साथ–साथ विशेष तौर पर राज्य की क्षेत्रीय विशेषताओं, सामाजिक–सांस्कृति परिदृश्य, आर्थिक संदर्भ, गौरवशाली अतीत एवं वर्तमान शैक्षिक जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। लेकिन, इस विषय का सकारात्मक प्रभाव बच्चों के ज्ञान एवं जीवन पर तभी पड़ सकता है जब शिक्षक इसका शिक्षण रोचक एवं प्रभावी ढंग से करें। इस विषयपत्र के माध्यम से प्रशिक्षुओं में यह नज़रिया एवं समझ विकसित की जाएगी कि वे अपने आस–पास के परिवेश से सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के संभावनाओं एवं स्रोतों को खोजकर इस्तेमाल कर सकें।

## उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- सामाजिक विज्ञान की प्रकृति एवं अवधारणा का विश्लेषणात्मक समझ विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं को उच्च प्राथमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान के पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम से परिचय कराना।
- प्रशिक्षुओं में सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों के शिक्षण उपागमों एवं विधियों से अवगत करना।
- सामाजिक विज्ञान में आकलन–मूल्यांकन की समझ विकसित करना।

## सामाजिक विज्ञान का शिक्षण शास्त्र

**पूर्णांक : 50 (35+15)** **S-9.C** **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

### इकाई–1 : सामाजिक विज्ञान की समझ

- सामाजिक विज्ञान की अवधारणा : प्रकृति उद्देश्य एवं महत्त्व
- सामाजिक विज्ञान के प्रमुख क्षेत्र : भूगोल, इतिहास, राजनीतिविज्ञान, अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 के संदर्भ में सामाजिक विज्ञान

इस इकाई के शुरूआत में सामाजिक विज्ञान की प्रकृति, उद्देश्य एवं आवश्यकता की सामान्य चर्चा की जाएगी। सामाजिक विज्ञान की प्रकृति बहुविषयी है अतः इसके अंतर्गत आनेवाले विभिन्न विषयों के बारे में जानना भी जरूरी है। यहां उनके बारे में संक्षिप्त चर्चा की जाएगी क्योंकि आगे की इकाइयों में उनके बारे में विस्तार से विवरण दिया जाएगा। साथ ही, सामाजिक अध्ययन शिक्षण को लेकर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 में कही गई बातों को विभिन्न उदाहरणों द्वारा समझाने का प्रयास किया जाएगा।

### इकाई–2 : उच्च प्राथमिक स्तर सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें

- उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम, सम्बद्ध विषय एवं उनके उद्देश्य
- सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों की समझ
- सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत विभिन्न विषयों के विषयवस्तुओं की समझ

बिहार के उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न विषयों के विषयवस्तु की चर्चा की गई है, जिसका विश्लेषणात्मक समझ इस इकाई के माध्यम से प्रशिक्षुओं को दी जाएगी। इसके माध्यम से प्रशिक्षु पाठ्यक्रम में प्रकरण (थीम) आधारित उपागम का महत्त्व समझ पाएंगे। साथ ही, प्रशिक्षुओं को सामाजिक विज्ञान के पाठ्यपुस्तकों से इसके जुड़ाव की भी समझ विकसित की जाएगी। यह ध्यान दिया जाएगा कि विभिन्न विषयों के पाठ्यपुस्तकों में दिए गए प्रकरणों के आपसी जुड़ाव की समझ भी यहां दी जाए।

### इकाई–3 : सामाजिक विज्ञान का शिक्षण

- सामाजिक विज्ञान : शिक्षण के आधाभूत सिद्धांत, उपागम तथा सीखने की योजना का स्वरूप
- शिक्षण में आई.सी.टी. तथा कला समेकन का उपयोग
- इतिहास : शिक्षण विधियां, तकनीक एवं शिक्षण सामग्रियां
- भूगोल : शिक्षण विधियां, तकनीक एवं शिक्षण सामग्रियां
- समाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन : शिक्षण विधियां, तकनीक एवं शिक्षण सामग्रियां

सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों के अंतर्गत तरह–तरह के शिक्षण विधियों को अपनाने की अपार सम्भावनाएं हैं, जिसके माध्यम से सीखने की योजना को बच्चों के लिए बहुत ही रोचक एवं बोधगम्य बनाया जा सकता है। यह तभी सम्भव है जब प्रशिक्षुगण सामाजिक विज्ञान के संदर्भ में सीखने–सिखाने के आधारभूत सिद्धांतों को समझ लें। इसके आधार पर कई विधियों को समझना जरूरी है जैसेकि–कथात्मक विधि, स्रोत विधि, मानचित्र विधि, परियोजना विधि, समस्या समाधन विधि, क्षेत्र भ्रमण, आँकड़ा विश्लेषण विधि, सर्वे, केस स्टडी, द्विपक्षीय प्रश्नोत्तर विधि, नाटक विधि, सतत् अभ्यास रीति, वृत्त चित्र, उदाहरण रीति, साक्षात्कार विधि, प्रकृति अध्ययन, समूह शिक्षण विधि आदि। इसके साथ ही, शिक्षण सामग्रियों तथा उपयोगी स्रोतों की चर्चा की जाएगी। कोशिश यह रहेगी कि विधियों को उनके विषय संदर्भ के अनुसार समझा जाए।

**इकाई–4 : सामाजिक विज्ञान में आकलन–मूल्यांकन**

- सामाजिक विज्ञान में आकलन–मूल्यांकन की अवधारणा : सामान्य एवं विषय–विशेष के अनुसार
- सीखने के संकेतकों की समझ
- पाठ्यपुस्तकों में दिए गए गतिविधियों, प्रदत्त कार्यों एवं सवालों का विश्लेषण
- शिक्षण के दौरान पूछने योग्य सवालों की समझ
- सामाजिक विज्ञान में बच्चों के आकलन–मूल्यांकन के विविध तरीकों की समझ

सामाजिक विज्ञान में आकलन–मूल्यांकन के केन्द्र में बच्चों के संदर्भगत समझ के साथ–साथ सीखने के विभिन्न संकेतकों को समझना जरूरी है। इसके अंतर्गत, सम्बद्ध अवधारणाओं के अनुप्रयोग, कौशल एवं समझ को नयी परिस्थितियों में उपयोग करने की क्षमता जाँचने वाले सवालों का निर्माण एवं उपयोग जरूरी है। इस इकाई में सामाजिक विज्ञान कें विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों के आकलन–मूल्यांकन सम्बंधी हिस्सों का विश्लेषण किया जाएगा, ताकि उन सवालों से बच्चों का आकलन–मूल्यांकन किस तरह हो सकता है, इसकी समझ प्रशिक्षुओं को हो सके। साथ ही, आकलन–मूल्यांकन के विभिन्न तरीकों के प्रयोग की समझ दी जाएगी।

**प्रस्तावित कार्य**

- सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों का प्रशिक्षुओं द्वारा समालोचनात्मक विश्लेषण करना।
- विभिन्न गतिविधियों की सूची का निर्माण तथा विभिन्न विषय–वस्तुओं के शिक्षण के लिए उनके अनुरूप उपयुक्त शिक्षण–विधि की रूपरेखा का निर्माण।
- प्रशिक्षुओं द्वारा सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तुओं को स्वयं कैसे नियोजित करतें हैं तथा उनके द्वारा नियोजित विषय–वस्तु के पीछे उनके तार्किक आधारों की सूची बनवाना।
- स्थानीय संसाधनों का प्रशिक्षुओं द्वारा सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में प्रयोग पर एक रिपोर्ट बनवाना।
- प्रशिक्षुओं द्वारा विद्यार्थियों की गतिविधियों का अवलोकन तथा उस अवलोकन के आधार पर मूल्यांकन के मापदण्डों को निर्धारित करने के तरीके पर चर्चा कराना।

**S-9.D**

# PEDAGOGY OF ENGLISH (Upper Primary)

## Introduction

This course focuses on the teaching of English to learners at the Upper Primary level. The aim is to equip student teachers with the pedagogical insights essentially needed to transact the text book and other teaching learning materials effectively in the class room. The course has been designed for the student teachers so that they may transact the content keeping in view the difficulties that the learners face while learning a second language. It gives opportunity to the teacher four language skills and be proficient and presentable in it. A special emphases is also laid on the techniques of adaptation and evaluation of the text material by keeping in view the level of their learners, it also gives ample opportunity to design their learning plan effectively by using different methodologies. It deals with the constructivist approach to teaching English as one of the possible remedies to overcome the difficulties of the learners. It is needless to say that this course takes into consideration the paradigm shift in teaching learning process.

## Objectives

The objectives of teaching this subject are:-

- To understand the basic concepts and methods of teaching English as a Second Language
- To know about the challenges of teaching English in the context of the learners
- To develop skills for utilising instructional materials for effective teaching
- To develop skills for making creative learning plan and for its classroom transaction

## PEDAGOGY OF ENGLISH (Upper Primary)

**S-9.D**

**Full Marks: 50 (35+15)** **Study Time: 40 Hrs.**

**Unit-1 : Methods and approaches for teaching English at upper primary level**

- Teaching of English at the upper primary level with reference to NCF-2005 and BCF-2008
- Objectives of teaching English at upper primary level in Bihar
- Understanding the Curriculum-syllabus-textbook of English in Bihar at upper primary level

The concept of common errors, English sound accuracy could be developed through various activites. Understanding of objectives and curriculum/syllabus could be developed through various set up of tasks. Task should be based on strategies, mock situations, linguistic competence and communicative competence, brain storming questions.

**Unit–2 : Strategies for Teaching language skills and grammar in context**

- Listening and Speaking: word accent, group discussion, spoken English.
- Reading : seen/unseen passages, reading of informative pieces with essays reading of fables/ folk tales/shortpalys /short stories
- Writing: controlled, free, guided composition, sentence making, dictations, grammar items and translations.

These strategies for teaching different language skills can be developed by recitation and poem telling and retelling the stories, anecdotes, role play interpreting picture/cartoons

**Unit–3 : Evaluating and adapting teaching materials; using audio-visual materials**

- Need and techniques of evaluating learning materials
- Need and process of adapting materials
- Techniques for adaptation

This unit will focus on the need and techniques of the evaluation of learning material keeping in mind the level of their learners. It will acquaint them with the various approaches to material evaluation and adaptation. They will be able to adapt the material according to their need. These things will be explained with the help of text books.

**Unit–4 : Learning Plan at upper primary level**

- Points of concerns while making learning plan
- Strategies and format for developing a learning plan for teaching English using specific skills/concepts/genres, Prose, poetry, drama, integrated grammar
- Sample learning plans of English

The focus will be on improving four skills by using a variety of teaching methodologies. The strategies for teaching different literary genres are taken from the text book of class 6 to 8.

**Suggestive works**

- Try to find out the common errors made by your students because of their mother-tongue interferences at both syntactic and phonological levels.
- Make yourself acquainted with the International Phonetic Alphabet (I.P.A) symbols of all the forty four sounds in English to help yourself in teaching your students learn the proper pronunciation of each word given in all good dictionaries.
- Prepare at least three language games for the development of language skills.
- Develop a short story for children in view of developing certain concepts or skills.
- List out hundred words of English from the newspaper you read. Write down their meanings and use them into sentences of their own.
- Prepare a list of 50 words and suggest how they are used as noun, adjective and adverb. Make suitable changes if necessary. Write them in a tabular form. You may take help of a dictionary.
- Prepare indicators to assess the learning levels of learners at different levels, in terms of development of four skills (LSRW).

**S-9.E**

## हिन्दी का शिक्षणशास्त्र (उच्च प्राथमिक)

### संदर्भ

यह विषय–पत्र उन प्रशिक्षुओं के लिए है जो उच्च प्राथमिक स्तर के हिन्दी विषय में अपनी शिक्षण दक्षताओं को बढ़ाना चाहते हैं। इस लिहाज से सबसे पहले यह सवाल उठता है कि वे उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों तथा विद्यालयी पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों की समझ बनाएं। साथ हीं, वे हिन्दी शिक्षण के उन उपागमों एवं विधियों से परिचित हों, जो उच्च प्राथमिक स्तर के लिए जरूरी हैं। इसके अंतर्गत, हिन्दी के शिक्षणशास्त्र के पूर्ववर्ती भागों में चर्चा की गई व्यवहारवादी, रचनात्मक एवं आलोचनातमक उपागम के विभिन्न संदर्भों और उनके कक्षायी उपयोग के बारे में और गहराई से समझा जाएगा। हिन्दी शिक्षण का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि किन शैक्षिक सामग्रियों के आधार पर समझ को विकसित किया जाएगा। विषयपत्र इसे व्यापक रूप से समझने–विश्लेषित करने का प्रयास है। साहित्य क्या है, इसकी विभिन्न विधाएं क्या है, साहित्यिक अभिव्यक्ति कौशल में सामर्थ्य बढ़ोतरी के लिए किन संदर्भों को जानना जरूरी है, आदि पहलू हैं, जिनका विश्लेषण किया जाएगा। हिन्दी शिक्षण में भाषायी क्षमता के विकास के लिए कक्षेतर विषयों पर पढ़ने, बोलने और लिखने के कौशल को समझना एक विशिष्ट पहलू है, जिसे समझने का प्रयास किया जाएगा। उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी के संदर्भ में आकलन और मूल्यांकन के पहलू क्या हो सकते हैं, पारम्परिक शैली और नयी शैली में क्या अंतर है आदि अन्य ऐसे विषय हैं जिनकी व्यापक समझ इस विषयपत्र के उद्देश्य हैं।

### उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों को समझना।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों की समझ बनाना।
- हिन्दी शिक्षण के विभिन्न उपागमों एवं सहायक सामग्रियों के विषय में जानना।
- साहित्यिक पक्षों की समझ विकसित करके अपने शिक्षण को संवर्द्धित करना।
- प्रशिक्षुओं की भाषाई क्षमताओं को इस तरह समृद्ध करना ि कवे उसका उपयोग अपनी कक्षाओं में कर सकें।
- कक्षा प्रक्रियाओं के संदर्भ में हिन्दी भाषा के मूल्यांकन के विविध आयामों की समझ बनाना।
- हिन्दी भाषा के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन करने के तरीकों के बारे में जानना।

## हिन्दी का शिक्षणशास्त्र (उच्च प्राथमिक)

**पूर्णांक : 50 (35+15)** | **S-9.E** | **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

**इकाई –1 : उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण, उपागम एवं सहायक सामग्री**

- उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी शिक्षण का स्वरूप एवं उद्देश्य
- उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों की समझ
- शिक्षण के विभिन्न उपागम, विधियाँ तथा रणनीतियाँ :
  – व्यवहारवादी, रचनात्मक तथा आलोचनात्मक उपागम की समझ
- शिक्षण सहायक–सामग्री
  – सामग्री के उपयोग को उद्देश्यों और विधियों की तारतम्यता में समझना
  – सामग्री को उपलब्धता एवं उपयोगित के सिद्धांत पर समझना
  – भाषा शिक्षण में स्वयं भाषा के विभिन्न उपयोगों तथा रूपों को सामग्री के रूप में उपयोग करना

उद्देश्यो की समझ के लिए बिहार राज्य सहित विभिन्न राज्यों तथा एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अनुमोदित हिन्दी के पाठ्यक्रम मददगार होंगे। इन दस्तावेजों में हिन्दी शिक्षण के दिए गए उद्देश्यों को समझना तथा उनकी समीक्षा करने के लिए प्रशिक्षु की समझ को विकसित करने में सहायक होगा। शिक्षण की रणनीतियों को शिक्षण–उपागमों के संदर्भ में समझने से शिक्षकों की स्वायत्तता बढ़ेगी। रणनीतियों, उपागमों के परिप्रेक्ष्य में उपयुक्त या अनुपयुक्त होती हैं। इसीलिए शिक्षण–रणनीतियों को शिक्षण–उपागमों के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। सहायक सामग्री को उद्देश्य तथा उपागम की तारतम्यता में समझना जरूरी हैं। कौन से उद्देश्यों के लिए कौन सी सामग्री उपयुक्त होगी। यह प्रश्न दोनों के बीच रचनात्मक संबंध को स्थापित करता है। प्रत्येक उपागम की अपनी–अपनी विधियाँ हैं। उनमें कुछ साझा भी है। जैसे – व्यवहारवादी उपागम की एक विधि है व्याख्यान पद्धति। इसमें बाहरी सूचनाओं को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। रचनात्मक उपागम की एक विधि है विद्यार्थी को शारीरिक एवं मानसिक तौर पर गतिशील होने के अवसर उपलब्ध करवाती है। आलोचनात्मक उपागम की एक विधि है संवाद। इसमें विद्यार्थी के अनुभवों को राजनीति, अर्थ, धर्म, संस्कृति जैसी व्यापक संरचनाओं के साथ एकाकार करके नई विचार तथा नई दुनिया रचने की दिशा में प्रेरित किया जाता है।

**इकाई –2 : साहित्य और साहित्य के द्वारा शिक्षण**

- साहित्य की संकल्पना और उसकी विधाओं का सामान्य परिचय
  – पाठ्यपुस्तकों में शामिल सभी विधाएँ
  – शब्द शक्ति एवं अन्य साहित्यिक तत्वों को समझना तथा शिक्षण में उनका उपयोग करना
- भाषा के विकास में साहित्य का उपयोग
  – कहानियों आदि का उपयोग कर विद्यार्थियों की भाषायी–कुशलताओं का विकास करना
  – साहित्य का उपयोग कल्पना करने, समझने, चिन्तन करने, व्यक्त करने हेतु स्थितियाँ रचने के लिए करना
  – साहित्यिक रचनाओं के उपयोग से व्याकरणिक तत्वों का संदर्भगत शिक्षण करना
  – साहित्य की मदद से हिन्दी की बहुभाषिक विशेषताओं की समझ बनाना
- पाठ्यपुस्तको में दी गयी रचनाओं के उपयोग से व्याकरणिक तत्त्वों का संदर्भगत शिक्षण

इस इकाई में प्रशिक्षु विभिन्न साहित्यिक विधाओं तथा भाषा के शिक्षण में उनके उपयोग की समझ बनाएंगे। वे हिन्दी के पाठ्यक्रम में दी गई विधाओं और पाठों को आधार बनाकर साहित्य के बारे में समझ बनाएंगे। वे साहित्य की समझ का उपयोग विद्यार्थियों की भाषायी क्षमताओं को विकसित करने हेतु करेंगे। जैसे हमने 'भाषा और शिक्षा' के पत्र में पढ़ा की भाषा के सामान्य उद्देश्यों में एक है 'कल्पनाशीलता' का विकास करना। तो कहानी/कविता/नाटक आदि की विशेषताओं को समझकर 'कल्पनाशीलता' विकसित करने में उनका उपयोग करने की रणनीतियाँ बनाना और उनका उपयोग करना। साथ ही प्रशिक्षु व्याकरण पढ़ाने के संदर्भगत तरीकों व विश्लेषणात्मक तरीकों का उपयोग करने में साहित्य का उपयोग कर सकेंगे।

**इकाई–3 : प्रशिक्षुओं की भाषाई क्षमताओं का विकास**

- प्रशिक्षु विभिन्न स्थितियों में प्रभावशाली ढंग से अपनी बात कह सकें।
- विभिन्न प्रकार की पाठ्य–सामग्री को स्पष्टता और प्रवाहशीलता से पढ़ते हुए समझ सकें
- वे लिखी हुई और कही गई बातों को समझ सकें
- वे दो–तीन मिनट की विभिन्न विषयों पर की जा रही चर्चा को सुनकर, समझा सकें
- वे किसी दी गई स्थिति का संक्षिप्त विवरण तैयार कर सकें
- वे विभिन्न प्रकार के संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी भाषा के स्वरूप को समझ सकें
- वे विभिन्न परिचित विषयों पर सहपाठियों का साक्षात्कार ले सकें और उसका लिखित रूप प्रस्तुत कर सकें
- विभिन्न प्रकार से साहित्यिक लेखन कर सकें

इस इकाई के जरिए भावी शिक्षकों को भाषाई क्षमताओं को विकसित करने के अवसर उपलब्ध करवाएं जाएंगे। वे कुछ लम्बे संवादों को सुनकर लिख सकें। पढ़कर संक्षिप्त व विस्तृत कर सकें। परिचित तथा कम परिचित विषयों पर मौखिक व लिखित तौर पर विचार व्यक्त कर सकें। इस प्रकार की गतिविधियाँ शिक्षक अपने प्रशिक्षुओं के साथ करें ताकि प्रशिक्षु स्कूल में बच्चों के लायक गतिविधियाँ अपनी कक्षा में कर सकें।

**इकाई –4 : कक्षा प्रक्रियाएँ तथा आकलन**

- क्या, कैसे और किसे पढ़ाना है
- विद्यार्थी की मौखिक अभिव्यक्ति का आकलन करने के पैमाने और तरीके
- विद्यार्थी की लिखित अभिव्यक्ति का आकलन करने के पैमाने और तरीके
- विद्यार्थी की पढ़ने की क्षमता का आकलन करने के पैमाने और तरीके
- विद्यार्थी की कल्पनाशीलता, चिंतन, क्षमता, वर्णन करने की क्षमता आदि का मूल्यांकन करने के पैमाने और तरीके

पहले वर्ष में आपने मूल्यांकन के उन तत्वों के बारे में समझ बनाई जो प्रारम्भिक शालाओं के लिए उपयोगी थी। इस ईकाई में यह समझा जाएगा कि कक्षा 6–8 के विद्यार्थियों की भाषाई क्षमताओं के विकास को समझने के लिए किन तत्वों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। हम ऐसे मानक बनाने में सफल हो सकें जो कक्षा 6–8 के विद्यार्थियों की भाषाई क्षमताओं का मूल्यांकन करने और उनकी क्षमताओं को समझने में मददगार हो। यह आवश्यक है कि रचनात्मक दृष्टि के आलोक में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की बात करते हुए, मूल्यांकन को कक्षा–प्रक्रियाओं का अभिन्न और अनिवार्य तत्व समझा जाए।

**प्रस्तावित कार्य**

- बिहार राज्य में हिन्दी की प्रारम्भिक कक्षाओं के वर्तमान पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों की निम्नलिखित दृष्टियों से समीक्षा कीजिये : दोनों में अंतःसंबंध, संवैधानिक मूल्य तथा बाल मनोविज्ञान
- हिन्दी में प्रकाशित (मूल या अनुदित) किसी अन्य विषय (मीडिया, राजनीति, समाज, सामाजिक लिंग–भेद, विज्ञान, भाषा आदि) की पुस्तक की समीक्षा कीजिए।
- छठी से आठवीं कक्षा की किसी एक कक्षा के लिए एक–एक सहायक सामग्री का निर्माण कीजिए जिनका उपयोग उस कक्षा के विद्यार्थियों में मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास इस प्रकार करने में मदद करे कि विद्यार्थी छोटे तथा बड़े समूह में किसी बात की वैचारिक स्पष्टता तथा प्रवाहशीलता के साथ रख सकें।
- विद्यार्थियों की पढ़ने की क्षमता या लिखने की क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए एक रणनीति तथा मूल्यांकन के पैमाने बनाइए। उनका किसी एक कक्षा के विद्यार्थियों पर उस रणनीति तथा पैमानों को लागू करके एक रिपोर्ट बनाइए।

**S-9.F**

# संस्कृत का शिक्षणशास्त्र

## संदर्भ

भारत की प्रायः अधिकांश भाषा सहित्य को समृद्ध करने में संस्कृत भाषा का विशेष योगदान रहा है। यही कारण है कि उन भाषाओं में संस्कृत के बहुतायत शब्दों का प्रयोग होता है। आधुनिक भाषाओं के साहित्य एवं बोलचाल में प्रयुक्त शब्दों के मूल को समझने के दृष्टिकोण से भी संस्कृत की समझ उपयोगी है। इन भाषाओं के तत्सम एवं तद्भव शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया संस्कृत ज्ञान के बिना नहीं समझी जा सकती है। इस तरह, संस्कृत का उपयोग हमारे आमजीवन की भाषा में किसी न किसी स्वरूप में होता रहता है। अतः संस्कृत को वर्तमान संदर्भों के अनुसार प्रासंगिक रूप से समझने की आवश्यकता है। बच्चों को संस्कृत भाषा में समृद्ध करने के लिए हमारे विद्यालयों में इसके शिक्षण पर भी विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इसके लिए विद्यालय के शिक्षकों की तैयारी सबसे अहम है। इस विषयपत्र में यह कोशिश की गयी है कि प्रशिक्षुओं को संस्कृत के व्यावहारिक स्वरूप से अवगत कराते हुए उसके नवाचारी शिक्षण की बात की जाए। विद्यालयी स्तर पर बच्चों में संस्कृत की लोकप्रियता को बढ़ाने के लिए विभिन्न रोचक गतिविधियों की समझ भी प्रशिक्षुओं को दी जाएगी।

## उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- संस्कृत भाषा की प्रकृति एवं विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- संस्कृत के संरचनागत तत्वों–ध्वनि, शब्द, धातु, वाक्य अर्थ से परिचय प्राप्त करेंगे।
- भाषिक विविधता, बहुभाषिता में संस्कृत की भूमिका का समझ सकेंगे।
- संस्कृत के श्लोकों को शुद्ध–शुद्ध उच्चारण के साथ धन्दबद्ध गायन कर सकेंगे एवं गद्यों का वाचन अर्थबोध के साथ कर सकेंगे।
- संस्कृत के श्क्षिण में समुचित साधन, सामग्री एवं प्रविधियो का प्रयोग कर सकेंगे। संस्कृत के सन्दर्भ में आकलन, मूल्यांकन एवं प्रश्न निर्माण कला की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

# संस्कृत का शिक्षणशास्त्र

**पूर्णांक : 50 (35+15)** **S-9.F** **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

**इकाई–1 : संस्कृत की प्रकृति, विशेषताएं एवं विषयवस्तु**

- संस्कृत की प्रकृति एवं विशेषताएं
- संस्कृत भाषा की संरचनागत विशेषताएं
- कक्षा शिक्षण में संस्कृत के आंचलिक भाषा के साथ संबंध की व्याख्या
- प्रारम्भिक स्तर पर संस्कृत का पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकें

**इकाई–2 : संस्कृत भाषा–शिक्षण कौशल**

- संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं उपागम
- श्रवण कौशल एवं इसके विकास की विधियाँ
- पठन कौशल एवं पठन कौशल के विकास की विधियाँ समस्याएँ एवं निदान
- लेखन कौशल की विभिन्न विधियाँ
- वाचन कौशल (मौखिक अभिव्यक्ति)

**इकाई–3 : संस्कृत साहित्य एवं व्याकरण शिक्षण**

- श्लोक (पद्य) शिक्षण
- गद्य शिक्षण (निबंध, नाटक आदि)
- व्याकरण शिक्षण की विविध विधियाँ एवं नवाचार
- प्रश्न पत्र निर्माण कला

**इकाई–4 : संस्कृत भाषा का मूल्यांकन**

- संकल्पना एवं अवधारणा
- विभिन्न विधाओं का मूल्यांकन
- प्रश्न पत्र निर्माण कला

**प्रस्तावित कार्य**

- अपने क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषाओं का सर्वेक्षण करके उसे संस्कृत भाषा के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।
- अपनी मातृभाषा के किन्ही 20 शब्दों की सूची तैयार कर इनका संस्कृत के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।
- पाठ्यक्रम से किन्हीं एक संस्कृत शब्दों का संकलन कर उन्हें अपनी आंचलिक भाषा के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।
- अपने विद्यालय के आसपास के प्रसिद्ध संस्कृतज्ञों का साक्षात्कार।
- आस–पास के संस्कृत के मनीषियों के सम्बन्ध में जानकारी संकलन।
- कक्षा 6 से 8 की संस्कृत पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा।

(چترتھ ستر) S-9.I

# تدریس اردو

کل میزان:۱۰۰ | چرچہ:۷۰ گھنٹہ

پرائمری مدرسین کی تیاری کو اسکولی درسیات کے ساتھ جوڑنا وقت کی ناگزیر ضرورت ہے۔ جن وجوہات کی ترسیل کی بنا پر پرائمری اسکولوں میں اردو زبان کا درس کیا جاتا ہے ان سبھی باتوں کو ذہن میں رکھتے ہوئے اس پرچے کے ابواب اور انکے ذیلی نکات طے کئے گئے ہیں۔

مدرس طلبا اردو زبان کی مختصر تاریخ سے آشنا ہوتے ہوئے اردو زبان کی خوبیوں اور اسکی ساخت سے بھی آشنا ہونگے جو پہلی سے پانچویں درجات کے تدریس میں معاون ہونگی۔ یہ پرچہ مدرس طلباء کی صلاحیتوں کو اس طرف راغب کرانے کے حالات بھی مہیا کراتا ہے۔

مدرس طلبا اردو زبان میں سننے، بولنے، پڑھنے اور لکھنے کی بنیادی صلاحیتوں اور اہلیتوں سے آشنا ہونگے اور ان مہارتوں کے مطالب، ان کے فروغ کے مرحلوں اور درجات میں ان کے استعمال کے طریقوں سے بھی آشنا ہونگے۔

مدرس ہونے کے لئے یہ لازمی ہے کہ آپ جن مہارتوں اور خصوصیات کو طلبا میں دیکھنا چاہتے ہیں وہ سبھی خوبیاں اور خصوصیات آپ کی شخصیت میں بھی نمایاں ہوں۔ اس لحاظ سے یہ پرچہ طلبا مدرسین میں ان مہارتوں اور خصوصیات کے فروغ دینے میں بھی اہم ہے۔

مدرس طلباء کو ایسے مواقع حاصل کرائے جائیں گے جن کی مدد سے وہ سننے، بولنے، پڑھنے، لکھنے، کی مہارتوں کا استعمال پرائمری درجات میں کرنا اور ساتھ ہی ان مہارتوں کا استعمال بچوں کے لئے مناسب تدریسی کارگزاریوں کی تخلیق کرنے میں بھی کرسکیں گے۔

مدرس طلبا بچوں کی مسلسل اور جامع تشخیص (Continuous and Comprehensive Evaluation) کرنے کی ترکیب اور طریقہ کار سے آشنا ہونگے اور ساتھ ہی تجزیہ کے اصول سے بھی واقف ہونگے۔ موجودہ امتحانات اور سی سی ای میں تفریق کرسکیں گے، وہ یہ بھی سمجھ پائیں گے کہ ہم تجزیہ اس لئے نہیں کرتے کہ بچوں کی غلطیاں نکالیں بلکہ ہم تجزیہ اس لئے کرتے ہیں کہ فرداً فرداً ان کی مدد کرسکیں۔

مدرس طلبا تدریس کے لئے منصوبہ سبق کی اہمیت سے آشنا ہونگے اور ساتھ ہی تخلیقی تدریسی نظام میں منصوبہ سبق کی اہمیت اور ضرورت سے بھی آشنا ہونگے اس کے علاوہ درجات میں سرگرمی اور دیگر کارکردگی کے لئے درجات کے نظم اور انکی دشواریوں سے بھی آشنا ہونگے۔

## باب اول: پرائمری سطح پر اردو تدریس کے مقاصد:

''بچوں کے شخصیت کی تعمیر میں مادری زبان کی خصوصی اہمیت ہے۔'' بچے اپنے ماحول میں جس زبان کا استعمال کرتے ہیں چاہے سننے بولنے میں یا سوچنے سمجھنے میں، سوال پوچھنے یا تفریق کرنے میں۔لہذا پرائمری سطح پر اردو تدریس کے مقاصد پر غور کرتے ہوئے اس بات کا خیال ضرور رکھنا چاہئے کہ دوسری زبانیں بھی اس کے اردو سیکھنے میں معاون ہوں۔یعنی مقامی زبانوں کے ساتھ ان کے گہرے تعلقات میں تفریق کرکے ہم اردو تدریس کو زیادہ موثر نہیں بنا سکتے۔ بلکہ ہمیں بچوں کے ذریعہ استعمال میں لائی جارہی زبان کو مرکز میں رکھ کرہی آگے بڑھنے کی ضرورت ہے۔آ

اپنے مقاصد کی ترسیل کے لئے این۔سی۔ای۔آر۔ٹی اور صوبہ بہار کے زیر اہتمام تیار کردہ تدریسی نصاب سے استفادہ کرنا ہوگا۔

☆ بچے اپنے خیالات اور تجربوں کو کام میں لائیں اس کے زیادہ سے زیادہ مواقع پیدا کرنا۔
☆ درجات میں مخلوط زبان کا استعمال کرنا۔
☆ بچوں کی باتوں کو توجہ سے سننااور ان سے ہی انکی باتوں پر سوال پوچھ کر مزید تفصیل کرنے یا وضاحت کرنے کے لئے آمادہ کرنا۔
☆ آپسی بات چیت کے مواقع حاصل کرانا۔
☆ لکھنا سیکھنے کے قبل کی تیاری کا ماحول بنانا۔
☆ سنی ہوئی کہانی کو اپنی زبان میں سنانے کے لئے آمادہ کرنا۔
☆ کتابوں کی طرف راغب کرنا۔
☆ بچوں کو اپنی زبان کی مدد سے ہی قواعد کے اصولوں کو مثال کے طور پر لانے کے لئے آمادہ کرنا۔

## باب دوئم: زبان کی مہارتوں کا فروغ:

بچوں میں زبان سیکھنے کی فطری قوت ہوتی ہے اسکول آنے سے قبل ہی بچے اچھا خاصہ زبان سیکھ چکے ہوتے ہیں۔ یہ بچے جب اسکول آتے ہیں تو اسکول کی بڑی ذمہ داری ہوتی ہے کہ ان کے علم کا استعمال کرتے ہوئے ان میں پڑھنے، لکھنے اور اظہار کرنے کی مہارتوں کا فروغ کیا جائے۔اس لئے اس باب کی شروعات میں ہم زبان کے مہارتوں کے فروغ کے عمل اور

انکے آپسی رشتوں کے بارے میں چرچہ کریں گے۔ عام طور پر شاید ہم سب یہ تسلیم کرتے ہیں کہ سننے بولنے پڑھنے لکھنے میں کچھ نہ کچھ آپسی تعلق ہے۔ لیکن سیکھنے سکھانے کی ترکیب کے دوران ہم یہ سمجھنے کی کوشش کریں گے کہ ان مہارتوں کا باہمی اختلات محسوس کرنا نہایت ضروری ہے اور ساتھ ہی یہ بھی ضروری ہے کہ یہ مہارتیں کس طرح ایک دوسرے کو متاثر کرتی ہیں اور ایک دوسرے کو فروغ میں معاونت کرتی ہیں۔

اس کے بعد ہم تفصیلی طور پر سننے اور بولنے کے معنی اور بچوں میں سننے کی صلاحیت و بولنے کی قوت کی مہارتوں کا فروغ کیوں ضروری ہے اور ان مہارتوں کے فروغ کے لئے کون کون سی سرگرمیاں کی جاسکتی ہیں اس پر سمجھ بنائیں گے۔ بچوں میں قوت اظہار کی مہارت کے لئے یہ ضروری ہے کہ مدرس طلباء کی اپنی قوت اظہار بھی بہتر ہو۔ اسی لئے اس باب کا ایک حصہ طلبا کی قوت نطق کے فروغ کے نئے نئے طریقوں پر مرکوز ہے۔

- ☆ زبان کی مہارتوں کی سمجھ۔
- ☆ زبان کی مہارتوں کے وجوہات و معنی اور ان کا آپسی تال میل۔
- ☆ سننے اور بولنے کا مطلب۔
- ☆ سننے و بولنے کو متاثر کرنے والے وجوہات۔

## مدرس طلبا کی زبانی قوت اظہار کا فروغ:

اپنے بارے میں بات کرنا۔ اسکول کے تجربوں پر بات کرنا، سنے ہوئے خیالوں کو مختصر اور تفصیلی طور پر کہہ پانا۔ مشاہدہ والے حالات پر روانی سے اظہار خیال کرنا۔ مدرس طلباء کو کہانی، ڈرامہ لکھنے اور سنانے کے مواقع مہیا کرانا، بچوں کو درجہ میں سننے و بولنے کے مواقع حاصل کرانا، مدرس طلباء بات کرنے اور گپ کرنے میں فرق کرنے کی سمجھ بتائیں گے، مدرس طلبا سننے میں مدد کرنے والی باتوں کے بارے میں سمجھ بنائیں گے۔

- ☆ گیت (بچوں کے)/نظم سنانا (بچوں کے گیت و نظموں کی مثالیں پرائمری درجات کی اردو کی درسی کتب سے بھی لئے جائیں گے۔)
- ☆ تصاویر پر گفتگو کرانا۔
- ☆ ڈرامہ اور رول پلے کرانا۔
- ☆ مشاہدوں اور تذکرہ کے مواقع مہیا کرانا۔
- ☆ مشاہدہ کروانا، تذکرہ کرنا

## باب سوئم: پڑھنے کی مہارت کا فروغ:

اس باب میں مدرس طلباء کے پڑھنے کی صلاحیت کا فروغ کیا جائے گا۔ پڑھنا سیکھنے کی سمجھ کو فروغ دیا جائے گا اور پڑھنا سکھانے کے طریقوں/ لائحہ عمل تیار کرنے پر زور دیا جائے گا۔ یہ ضروری ہے کہ طلباء پڑھنے کی صلاحیت کا فروغ کرتے ہوئے پڑھنا سیکھنے میں معاون ہونے والی باریکیاں سیکھیں۔

یہ باب پڑھنے کے بارے میں سمجھ بنانے پر مرکوز ہے۔ زیادہ تر اساتذہ/ والدین کی اپنے بچوں کے بارے میں یہ شکایت رہتی ہے کہ اتنا سکھاتے ہیں پھر بھی بچے پڑھ نہیں پاتے۔ یہ باب اسی بنیادی سوال کہ بچے کیوں نہیں پڑھ پاتے؟ کے مختلف جہتوں/ پہلوؤں کو سمجھنے میں مددگار ہے۔ اس میں پڑھنے کا مطلب، پڑھنے کا عمل، پڑھنا سکھانے کے مختلف طریقوں، بچوں کو پڑھاتے وقت اساتذہ کو آنے والی دشواریوں وغیرہ کے بارے میں بات کرتے ہوئے یہ سمجھانے کی کوشش کرنی ہے کہ بچوں کو پڑھنا سکھانے کے لئے کیا مناسب ہے اور کس پس منظر میں کون سی سرگرمیاں کی جاسکتی ہیں۔

☆ مدرس طلباء آسان مضمون کو صحیح تلفظ کے ساتھ روانی سے پڑھ سکیں گے۔

☆ مدرس طلباء اردو اخباروں کے مضمون مرکوز خبروں کا مطلب سمجھ سکیں گے۔

☆ مدرس طلباء آسان کہانی، مضمون، ڈرامہ وغیرہ کو پڑھ کر اس میں دی گئی اطلاعات کو مناسب ضابطے میں سنا سکتے ہیں۔

☆ مدرس طلباء آسان مضمون کو سرسری نظر سے پڑھتے ہوئے اس کے خاص باتوں کو سمجھ سکتے ہیں۔

مندرجہ بالا کے لئے طلباء مدرسین اپنے مدرسین کے ساتھ مختلف سرگرمیاں کریں گے۔

### پڑھنے کا مطلب:-

پڑھنے کی روانی و صحیح تلفظ کے ساتھ اس کا فروغ، پڑھنے اور رموز خوانی (Decoding) میں فرق۔

### پڑھنے کے عمل کے مختلف پہلو:-

رسم الخط پہچاننا، مطلب سمجھنا، اندازہ لگانا، پڑھ کر ردعمل دینا، پڑھ کر اختصار کرنا۔

### پڑھنے کے مختلف طریقے:

بلند خوانی، خاموش خوانی، لفظ اور معنی کا اندازہ لگاتے ہوئے پڑھنا۔

### پڑھنا سکھانے کے طریقے:

حرفی طریقہ کار، لفظی طریقہ کار، جملے کا طریقہ کار، موضوعاتی طریقہ کار

## باب چہارم: لکھنے کی مہارت کا فروغ:

اس باب میں مدرس طلباء کے لکھنے کی صلاحیت کو بڑھایا جائے گا۔لکھنا سیکھنے کی سمجھ بڑھائی جائے گی اور لکھنا سیکھنے میں مدد کرنے والی باریکیوں کو بروئے کار لانے کی عملی کاوشوں پر بھی غور کیا جائے گا۔

باب کی شروعات میں ہم لکھنے کا مطلب اور سمجھ پر چرچا کریں گے۔لکھنا صرف ایک طرح کا ذریعہ و وسیلہ ہے جس میں بولی گئی بات کو ظاہر کیا جا سکتا ہے؟ لکھنا مشکل کام مانا جاتا ہے۔کیا یہ واقعی مشکل ہے یا جو طریقے ہم لکھنا سکھانے کے لئے اپناتے ہیں وہ اس کو اور مشکل بنا دیتے ہیں؟ ہم اس پر بھی طویل گفتگو کریں گے کہ بچوں کے ساتھ لکھنا سکھانے کی شروعات کیسے کی جائے۔زبان لگاتار فروغ پاتی رہتی ہے۔اس کی مشکلات ہمیشہ بدلتی رہتی ہے لیکن تحریری زبان میں تبدیلی بہت ہی دھیرے دھیرے ہوتی ہے۔دوسری بات یہ ہے کہ تقریری زبان میں زبان کے معیار پر اتنا زور نہیں ہوتا جتنا کہ تحریری زبان میں۔بچوں کے ذریعہ لکھنا سیکھنے کے عمل کے **مخصوص** ردعمل ہیں اور اس باب میں ہم ان ردعمل پر بھی گفتگو کریں گے۔اچھی تحریر کی خوبیوں اور پرائمری درجات میں تحریری مہارتوں کے فروغ کے لئے کیا کیا مشق بچوں کو کرائے جا سکتے ہیں اس کے بارے میں بھی گفتگو کی جائے گی۔

مدرس طلباء مختلف موضوع پر ذاتی خط لکھ سکیں گے جس میں خبروں، جزیات اور خیالات کی ترسیل ہو۔ساتھ ہی معلموں/مدرسین، دوستوں، خاندانوں کے افراد اور پسندیدہ تاریخی کردار وغیرہ کے بارے میں اطلاعاتی مضمون لکھ سکیں گے۔

- ☆ دیئے گئے چند آسان حالات و واقعات پر مختصر کہانی یا رپورتاژ لکھ سکیں گے۔
- ☆ کوئی آسان کہانی یا مضمون پڑھ کر اس کا اختصار کر سکیں گے۔
- ☆ مندرجہ بالا صلاحیتوں کے فروغ کے لئے اساتذہ طلباء مدرسین کو مواقع فراہم کرائیں گے۔
- ☆ لکھنے کا مطلب لکھنے کی خوبی اور اس کے اقسام کا فروغ۔
- ☆ لکھنے کی شروعات قلم کو قابو میں کرنے کی مشق۔
- ☆ لکھنے سے قبل انگلیوں جیسے خط کھینچنا۔
- ☆ خوش نما خاکے بنانا جیسے (خط مستقیم، خط منحنی، خط مثلث نما، خط مربع نما، خط دائرہ نما)
- ☆ انگشت پر قابو ہو جانے کے بعد حرفوں، لفظوں اور جملوں کے لکھنے کی بالترتیب مشق۔
- ☆ پرائمری درجات میں لکھنے کی مہارتوں کے فروغ کے طریقہ: تصویر بنانا، تصویر سے کہانی بنا کر لکھنا، اپنی پسند کی چیزوں کے بارے میں لکھنا، کہانیوں کو آگے بڑھا کر لکھنا، سن کر لکھنا، تک والے مقفیٰ الفاظ لکھنا۔
- ☆ لکھنا سکھانے میں آنے والی مشکلات، مشکلات سے کیسے نبٹیں؟ کیا یہ واقعی مشکلیں ہیں یا بچوں کے ذریعہ سیکھنے میں آنے والے فطری مرحلے ہیں؟
- ☆ لکھنے کے مختلف جہت: خطوط نویسی، کہانی لکھنا، مضمون لکھنا، اشتہارات لکھنا، فارم بھرنا، درخواست لکھنا وغیرہ۔

## باب پنجم: منصوبہ سبق اور درجاتی عمل

- ☆ منصوبہ کا مطلب، ضرورت اور اہمیت

☆ منصوبہ سبق کے طریقے

☆ تخلیقی تدریس کی ترکیبیں اور منصوبہ سبق

☆ منصوبہ سبق اور تخلیقی درجاتی عمل میں رشتہ

## باب ششم: اردو زبان میں تشخیصی عمل/ اندازۂ قدر:

اس باب میں ہم یہ سمجھ بنانے کی کوشش کریں گے کہ ''اندازۂ قدر'' آ ہے کیا؟ موجودہ امتحان وآزمائش کے عمل سے ہمیں یہ تو معلوم ہوتا ہے کہ کس بچے نے ہر مضمون میں کتنے نمبر حاصل کئے ہیں۔ لیکن نمبرات کی یہ تعین نہ تو یہ سمجھنے میں مددگار ہوتی ہے کہ بچے نے کیا سیکھا اور نہ ہی یہ سمجھنے میں کہ اس نے کیا نہیں سیکھا اور اسے کہاں کہاں مدد کی ضرورت ہے۔ ایک اور بڑی دشواری موجودہ طریقہ آزمائش میں یہ ہے کہ وہ صرف اس بات کا محاسبہ کرتی ہے کہ بچے کی رٹنے کی صلاحیت کتنی ہے اور یہی وجہ ہے کہ بچوں میں اس کی وجہ سے بیجا اور غلط طرح کے تقابل کے خیال پیدا ہوجاتے ہیں۔

ان سبھی کو ذہن میں رکھتے ہوئے تشخیصی عمل کو پھر سے نئے رجحانات کے مطابق واضح کرنے کی ضرورت ہے۔ اس باب میں اندازۂ قدر کے مقاصد کیا ہونے چاہئے۔ آزمائش کس کی، کب اور کیسے کرسکتے ہیں۔ کیا اندازۂ قدر اور آزمائش و پیائش ایک ہی ہے؟ کیا آزمائش سیکھنے سکھانے کے عمل کا حصہ ہے؟ ان مدعوں پر تفصیلی بحث کرتے ہوئے تشخیصی عمل کو پھر سے سمجھنے کی ضرورت ہے۔

### اندازۂ قدر کا مطلب:

اندازۂ قدر کے تحت طلباء کی شخصیت کے وقوفی پہلوؤں کے ساتھ ساتھ اس کے احساسی، کیفیتی اور عملی نشوونما کی بھی جانچ کی جاتی ہے۔ یعنی اس میں طلباء کے رویے، شوق، تفکرات، تصورات اور عادتوں میں تبدیلی وغیرہ کا بھی اندازہ لگانا مقصود ہوتا ہے۔ اس کا انحصار صرف موادِ مضمون کی جانچ یا کسی ص مہارت یا لیاقت کی جانچ پر نہیں ہوتا۔ اس اعتبار سے اندازۂ قدر کا تصور زیادہ جامع اور بسیط ہے۔ اس کے بالمقابل امتحان کا تصور بہت محدود اور تعلیمی ونفسیاتی اعتبار سے بہت ناقص بھی ہے۔ اندازۂ قدر اگر مسلسل اور طلباء کی شخصیت کے تمام پہلوؤں کو مدنظر رکھ کر کیا جائے تو اسے ہی مسلسل اور جامع تشخیص (Continuous and Comprehensive Evaluation) کا نام دیا جاتا ہے جسے اختصار میں سی سی ای کہتے ہیں۔ سی سی ای سے اس بات کا اندازہ لگتا ہے کہ طلباء کا کون سا پہلو کمزور ہے اور کس سمت میں انہیں بازرسانی و اصلاح کی ضرورت ہے۔ سی سی ای سے اساتذہ کو بھی مضامین کی تنظیم نو اور طریقہ تدریس میں حسب ضرورت اصلاح کرنے میں مدد ملتی ہے۔

### اندازۂ قدر کے مقاصد:

☆ طلباء کو سیکھنے، میں معاون کے طور پر۔

☆ تعلیمی نظام کو استحکام دینے کے طور پر۔

☆ تخلیقی عمل کے طور پر۔

☆ محدود خوبیوں کو مضبوطی دینے کے طور پر۔

☆ محدود اوقات میں یا لگاتار تجزیہ کے طور پر۔

☆ پرائمری درجات میں ترتیب اور مناسبت کے ر ں کو سمجھنے اور سمجھانے کے طور پر۔

## زبان میں اندازۂ قدر کے طریقے:

☆ زبانی آزمائش

☆ تحریری آزمائش

☆ عملی آزمائش

☆ مشاہدہ

☆ پیش کش

☆ اداکاری

## پیش کردہ کام:

☆ تصویر: بڑی اور خوب جلی دس ایسی تصاویر کا انتخاب کیجئے جن کا استعمال در اوّل کے طلباء کو بات چیت کے مواقع حاصل کرانے کے لئے کیا جاسکے۔ ہر ایک تصویر کے ساتھ اس کے انتخاب کی و بتاتے ہوئے فائل تیار کیجئے۔

☆ اپنے ہم سبق کو تقریباً دوسو الفاظ کا کوئی ایک نیا اقتباس دے کر اس کو پڑھنے کے لئے کہیں۔ اس اقتباس کے مناسبت سے اس کے پڑھنے کی صلاحیت کا اندازہ کرنے کے لئے آپ کیا اور کیسے کریں گے؟ ایک رپورٹ تیار کیجئے۔

☆ چوتھی پانچویں کے ایک طالب علم کو ایک معلوم مضمون اور ایک نامعلوم مضمون پر لکھنے کو کہیں۔ اس کے ذریعہ لکھے ہوئے مضمون کا تجزیہ کر کے یہ بتایئے کہ لکھنے کا انحصار کن کن باتوں پر ہے۔

☆☆☆

**SEP-2**

# विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–2 : इन्टर्नशिप
# School Experience Programme-2: Internship

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के केन्द्र में एक सजग, सक्रिय और प्रतिबद्ध शिक्षक का होना आवश्यक है। साथ ही यह भी जरूरी है कि वह शिक्षक स्कूली गतिविधि के विभिन्न आयामों को न सिर्फ समीक्षात्मक ढंग से समझे बल्कि वह कुशलतापूर्वक इससे जुड़ी गतिविधियों को अंजाम भी दे सकें। पिछले दो–तीन दशकों में सिद्धांत और व्यवहार का अर्थपूर्ण संबंध स्थापित कर उन्हें एक दूसरे की कसौटी पर कसने की प्रक्रियायें लगातार बढ़ी हैं। कहने को प्रत्येक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'शिक्षण–अभ्यास' उसका एक अनिवार्य हिस्सा होता है, पर ऐसा कम ही हो पाता है कि शिक्षायी चिंतन को सक्रिय रूप से शिक्षण अभ्यास का हिस्सा बनाया जाये। नतीजतन शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सिद्धांतों को जपने की प्रवृत्ति तो बढ़ती ही है साथ ही शिक्षण अभ्यास एक हस्तक्षेपकारी अनुभव होने की बजाय महज एक अकादमिक कवायद बनकर रह जाती है। शिक्षण अभ्यास को शिक्षा के सिद्धांतों, शिक्षणशास्त्र व शिक्षायी चिंतन से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। कोशिश यह है कि शिक्षण–अभ्यास के अनुभव शिक्षायी विमर्श को समझने का आधार बनें तथा शिक्षायी विमर्श, शिक्षण–अभ्यास को और समीक्षात्मक बनाने में मददगार बने।

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम से तात्पर्य है विद्यालय में होने वाले कार्यों व गतिविधियों का समग्र अनुभव। इसका मूल उद्देश्य प्रशिक्षुओं में शिक्षण अभ्यास के साथ–साथ विद्यालय से जुड़ी अन्य गतिविधियों की समझ भी विकसित करना है। साथ ही, इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षु अपने शिक्षण व विद्यालय में अपनी भूमिका के प्रति एक आलोचनात्मक व मननशील दृष्टिकोण भी विकसित कर पाएँगे। वैसे तो इस डी.एल.एड. (दूरस्थ शिक्षा) कार्यक्रम कें अंतर्गत उन्हीं प्रशिक्षुओं का नामांकन किया जाता है जो पहले से ही विद्यालयों में शिक्षण कर रहे हैं। अतः विद्यालय के विभिन्न आयामों का अनुभव उनको स्वतः ही है। लेकिन, क्या वे उन विद्यालयी अनुभव का प्रयोग अपने शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए कर पाने में सक्षम हैं या नहीं, यह मुख्य सवाल है। इसलिए, विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के माध्यम से उनके अनुभवों को उपयोगी एवं सार्थक बनाने पर विशेष बल दिया जाएगा।

## उद्देश्य

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम को करने के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार से हैं :

- प्रथम वर्ष के विद्यालय अनुभव कार्यक्रम से प्राप्त समझ को विस्तारित करना।
- कक्षाकक्ष में विभिन्न विषयों के शिक्षण से सम्बंधित योजना निर्माण, शिक्षण अभ्यास तथा अपने शिक्षण के मूल्यांकन की समझ विकसित करना।
- विद्यालयी विषयों के शिक्षण के अंतर्गत आनेवाली समस्याओं का एक्शन रिसर्च के माध्यम से समाधान करना।
- अपनी कक्षा के बच्चों के सीखने के विकास का अध्ययन करना।
- बच्चों के सह–शैक्षिक पक्षों के विकास का केस स्टडी करना।
- विद्यालय और आस–पास के समुदाय के अंतर्सम्बंध को समझना तथा उसे सुदृढ़ बनाने के लिए सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों में भागीदारी करना।

**अवधि :** विद्यालय अनुभव कार्यक्रम न्यूनतम सोलह सप्ताह का है, जिसे द्वितीय वर्ष के उत्तरार्द्ध महीनों के दौरान किया जाना है। प्रशिक्षु अपने आवंटित विद्यालयों में विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के अंतर्गत निर्धारित कार्यों को करना शुरू करेंगे। सोलह में से चौदह सप्ताह का कार्यक्रम विद्यालय के अंदर की गतिविधियों के लिए तथा बाकी दो सप्ताह को समुदाय से सम्बंधित कार्यों को करने के लिए रखा गया है।

## विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के मूल्यांकन की रूपरेखा

**विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–2** 400 अंक : इसके मूल्यांकन के दो चरण होंगे। चरण–1 के अंतर्गत मूल्यांकन में सम्बंधित प्रशिक्षण केन्द्र की प्रमुख भूमिका होगी। चरण–2 के अंतर्गत अंतर्सन्थागत मूल्यांकन की तुलनात्मक व्यवस्था होगी। इससे प्रशिक्षण केन्द्रों के मध्य अंतःक्रिया को प्रोत्साहन मिलेगा। साथ ही, प्रशिक्षुओं को भी अपने कार्य पर मेन्टर के अलावा एक अन्य विशेषज्ञ का फीडबैक मिल सकेगा। चरण–2 के निर्धारण में राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् की प्रमुख भूमिका होगी।

<table>
<tr><th colspan="6">विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–2</th></tr>
<tr><td colspan="2" rowspan="2">प्रशिक्षु द्वारा किए जानेवाले कार्य निम्नलिखित हैं :</td><th colspan="2">मूल्यांकन चरण–1</th><th colspan="2">मूल्यांकन चरण–2</th></tr>
<tr><th>मेंटर सह मूल्यांकनकर्ता</th><th>अंक</th><th>मूल्यांकनकर्ता</th><th>अंक</th></tr>
<tr><td rowspan="2">1</td><td rowspan="2">शिक्षण अभ्यास</td><td>प्रत्येक विषय के लिखित लर्निंग प्लान की समीक्षा, प्रशिक्षण केन्द्र पर प्रति विषय डेमोन्स्ट्रेशन लर्निंग प्लान के शिक्षण की आलोचनात्मक समीक्षा, प्रति विषय एक–एक एक्शन रिसर्च की समीक्षा<br><br>लर्निंग प्लान के विषय — अंक<br>1 गणित (प्राथमिक स्तर) — 30<br>2 हिन्दी (प्राथमिक स्तर) — 30<br>3 अंग्रेजी (प्राथमिक स्तर) — 30<br>4 पर्यावरण अध्ययन — 30<br>5 उच्च प्राथमिक स्तर से चयनित एक विषय — 30<br><br>उपरोक्त प्रति विषय दिए गए 30 अंकों का विवरण :<br>• 15 अंक : प्रति विषय पंद्रह लिखित लर्निंग प्लान पर<br>• 10 अंक : प्रति विषय कम से कम एक डेमोन्ट्रेशन शिक्षण पर<br>• 05 अंक : प्रति विषय एक–एक एक्शन रिसर्च पर</td><td>150</td><td rowspan="2">एस.सी.ई.आर.टी. (बिहार) द्वारा निर्धारित</td><td rowspan="2">50</td></tr>
<tr><td>प्रशिक्षु को विद्यालय पर्यवेक्षण के लिए आवंटित मेंटर सह साधनसेवी के द्वारा कक्षा शिक्षण की समीक्षा व मूल्यांकन</td><td>100</td></tr>
<tr><td>2</td><td>बच्चों के सीखने के विकास का अध्ययन</td><td>प्रशिक्षु को आवंटित मेंटर सह साधनसेवी के द्वारा समीक्षा तथा मूल्यांकन</td><td>15</td><td>एस.सी.ई.आर.टी. (बिहार) द्वारा निर्धारित</td><td>15</td></tr>
<tr><td>3</td><td>बच्चों के सहशैक्षिक विकास का अध्ययन</td><td>प्रशिक्षु को आवंटित मेंटर सह साधनसेवी के द्वारा समीक्षा तथा मूल्यांकन</td><td>15</td><td>एस.सी.ई.आर.टी. (बिहार) द्वारा निर्धारित</td><td>15</td></tr>
<tr><td>4</td><td>सामुदायिक कार्य</td><td>विषयपत्र 'स्वयं की समझ' के साधनसेवी के द्वारा समीक्षा तथा मूल्यांकन</td><td>20</td><td>एस.सी.ई.आर.टी. (बिहार) द्वारा निर्धारित</td><td>20</td></tr>
<tr><td colspan="3">कुल</td><td>300</td><td>कुल</td><td>100</td></tr>
</table>

## 1. शिक्षण अभ्यास

शिक्षण अभ्यास के क्रम में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को समझना और उसे अभ्यास क्रम का हिस्सा बनाना इस पाठ्यचर्या का प्रमुख उद्देश्य है। यहाँ ज़रूरत होती है कि हम शिक्षण अभ्यास के क्रम में अपनी जिम्मेदारी (अकादमिक, शैक्षिक व सामाजिक) को शिक्षा के वृहत्तर परिणाम व लोकतांत्रिक समाज के संदर्भ में समझें। कक्षा के भीतर की प्रक्रिया कोई पृथक घटना नहीं है, बल्कि इसका गहरा जुड़ाव विभिन्न सामाजिक व ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से होता है। शिक्षक अपने सार्थक कर्म के माध्यम से असमान सामाजिक व्यवस्थाओं के विरुद्ध हस्तक्षेप करता है। उसकी यह भूमिका एक सांस्कृतिक कर्मी की तरह होती है। शिक्षण–अभ्यास में इस बात का विशेष ध्यान रखा जायेगा कि प्रशिक्षु–शिक्षक न सिर्फ शिक्षा के तकनीकी पक्ष को समझ पायें बल्कि वे अपनी हस्तक्षेपकारी भूमिका को भी साकार रूप दे सकें। कोशिश यह होनी चाहिए कि वे अनुभवों के जरिये रूढ़ीवादी समाजिक–सांस्कृतिक मान्यताओं को तार्किक ढंग से चुनौती दे सकें। इस क्रम में वे न सिर्फ शिक्षण योजना बनायें बल्कि वहाँ पढ़ाये जाने वाले विषयों पर एक आलोचनात्मक समझ भी विकसित करने की कोशिश करें। सीखने की योजना (लर्निंग प्लान) को विद्यालय में क्रियान्वित करने से पहले उसकी तैयारी करनी होगी। तैयारी के अंतर्गत सीखने की योजना को लिखकर अपने साधनसेवी सह मेन्टर से सुझाव लेना, प्रशिक्षण केन्द्र पर प्रति विषय कम से कम एक लर्निंग प्लान का सभी प्रशिक्षुओं के सामने डेमोन्स्ट्रेशन, प्रति विषय कम से कम एक एक्शन रिसर्च को करना शामिल है। इसके अलावा विद्यालय में लर्निंग प्लान का क्रियान्वय प्रमुख तौर पर किया जाएगा।

**अवधि :**

- लगातार चौदह सप्ताह (द्वितीय वर्ष के दौरान)
- प्रति सप्ताह पाँच (05) दिन (सोमवार–शुक्रवार)
- शनिवार व रविवारः योजना निर्माण, तैयारी व परामर्श सत्र के लिये प्रशिक्षण केन्द्र पर विचार–विमर्श

**सीखने की योजना (लर्निंग प्लान) :**

- कुल मिलाकर न्यूनतम (75) लर्निंग प्लान का निर्माण एवं शिक्षण
- प्रति विषय न्यूनतम पंद्रह (15) लर्निंग प्लान का निर्माण एवं शिक्षण। (प्राथमिक स्तर के चार विषय तथा उच्च प्राथमिक स्तर का एक विषय, कुल मिलाकर पांच विषय)
- प्रति विषय न्यूनतम दो (02) लर्निंग प्लान के लिखित प्रारूप का सम्बंधित साधनसेवी द्वारा समीक्षा
- प्रति विषय न्यूनतम एक (01) लर्निंग प्लान का प्रशिक्षण केन्द्र पर प्रशिक्षु द्वारा डेमोन्स्ट्रेशन–शिक्षण पर आलोचनात्मक समीक्षा
- प्रति विषय न्यूनतम दो (02) लर्निंग प्लान का विद्यालय में शिक्षण का पर्यवेक्षण तथा समीक्षा
- प्रति विषय न्यूनतम एक–एक लर्निंग प्लान के लिखित प्रारूप तथा कक्षा शिक्षण का बाह्य मूल्यांकन
- प्रति सप्ताह न्यूनतम पांच (05) और अधिकतम आठ (05) लर्निंग प्लान का निर्माण एवं शिक्षण

एक सीखने की योजना या लर्निंग प्लान से तात्पर्य एक अध्याय अथवा इकाई नहीं है। बल्कि, एक लर्निंग प्लान से तात्पर्य है एक कालांश के लिये शिक्षण की रूपरेखा। एक ही अध्याय अथवा इकाई में इसके कई शीर्षकों व अवधारणाओं को लेकर कई लर्निंग प्लान बनाये जा सकते हैं। लर्निंग प्लान का निर्माण कैसे किया जाये, इसकी चर्चा आप कई विषयों में समझ चुके हैं। इसकी विस्तृत चर्चा कार्यशाला के माध्यम से भी की जाएगी। प्रशिक्षु अपना स्वमूल्यांकन कैसे करेंगे, रिफ्लेक्टीव डायरी कैसे लिखेंगे, इन सब की चर्चा भी कार्यशाला में की जाएगी।

## 2. बच्चों के सीखने के विकास का अध्ययन

हर शिक्षक या शिक्षिका का शिक्षण कार्य तभी सार्थक है जब उसके कारण बच्चों के सीखने पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हो। अतः अपने शिक्षण की समझ के साथ–साथ सभी प्रशिक्षुओं को विभिन्न विषयों में बच्चों के सीखने के विकास का आकलन करना भी आना आवश्यक है। तभी वे यह समझ पाएंगे कि उनके द्वारा शिक्षण का बच्चों के सीखने पर क्या असर पड़ा है या अपने शिक्षण में किस तरह का नवाचार करें जिससे बच्चों के सीखने में सकारात्मक बदलाव आ सके। यह प्रदत कार्य इसी आलोक में दिया जा रहा है।

इसके अंतर्गत प्रशिक्षुगण अपने–अपने विद्यालय के किसी एक कक्षा का चयन कर उसमें पढ़नेवाले सभी बच्चों के सीखने के स्तर को कक्षा सापेक्ष समझेंगे। इसके लिए वे विभिन्न विषयों के संदर्भ में कुछ संकेतक या सीखने की कसौटियों को ध्यान में रखकर आकलन की योजना बनाएं तथा उसके आधार पर बच्चों के सीखने का आकलन करें। आकलन की प्रक्रिया से निकलकर आए आंकड़ों का विश्लेषण एवं रिपोर्ट के अंदर उसकी प्रस्तुति अवश्य करनी होगी। यह कार्य वे विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के शुरूआती दो सप्ताह के अंदर कर लें। यह इस प्रदत कार्य का पहला भाग होगा। यह अपेक्षा है कि प्रशिक्षुगण अपना शिक्षण अभ्यास का अधिकतम हिस्सा इसी चयनित कक्षा में करेंगे और अपने द्वारा बनाए जानेवाले विभिन्न विषयों के 'सीखने की योजना' में उन कसौटियों का ध्यान अवश्य रखेंगे जिनके आधार पर बच्चों का आकलन किया है। ताकि बच्चों के सीखने के स्तर को और बेहतर बनाने का उद्देश्य उनके शिक्षण के केन्द्र में रहे।

बारहवे–तेरहवे सप्ताह में जब शिक्षण अभ्यास का समेकन होनेवाला होगा तो प्रशिक्षुगण पुनः उस कक्षा के बच्चों का पहले निर्धारित कसौटियों पर आकलन करें। आकलन के दौरान निकलकर आए आंकड़ों का विश्लेषण एवं रिपोर्ट के अंदर उसकी प्रस्तुति अवश्य करनी होगी। यह इस प्रदत कार्य का दूसरा भाग होगा। अंत में प्रशिक्षुओं को पहले और दूसरे भाग से निकलकर आए आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण करना होगा। इसके अंतर्गत वे यह समझ पाने में समर्थ होंगे कि उनके द्वारा किए गए शिक्षण का उन बच्चों के सीखने के विकास पर कितना असर पड़ा। उपरोक्त सभी कार्यों को करके एक विस्तृत रिपोर्ट अपने प्रशिक्षण केन्द्र पर जमा करें। पूरे कार्य को करने के दौरान आप अपने साधनसेवियों, विशेषकर अपने मेंटर से अवश्य सुझाव लेते रहें।

## 3. बच्चों के सहशैक्षिक विकास का अध्ययन

विभिन्न विषयों के शिक्षण के साथ–साथ बच्चों के सहशैक्षिक (को–स्कोलास्टिक) विशेषताओं को प्रोत्साहित करना भी शिक्षण कार्य का ही भाग है। बच्चों में कई तरह की सृजनात्मक क्षमताएं होती हैं जो अक्सर किताबी ज्ञान पर जोर देने के कारण निखर नहीं पातीं। एक तरह से देखें तो यह बच्चों के सर्वांगीण विकास के खिलाफ़ है। अतः शिक्षकों को ऐसी समझ होनी चाहिए जिससे वे बच्चों के सहशैक्षिक पक्षों के विकास को प्रोत्साहित कर सकें। कला, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियां, सृजनात्मक कार्य आदि इसके उदाहरण हैं।

इस प्रदत कार्य कें अंतर्गत प्रशिक्षुओं को अपने विद्यालय के कम से कम दस बच्चों के सहशैक्षिक पक्षों का विस्तृत अध्ययन करना होगा। यह विश्लेषण करें कि उन बच्चों के कौन से सह–शैक्षिक पक्ष बहुत मजबूत हैं। आप जो निष्कर्ष निकालेंगे उसके लिए तथ्य/आंकड़े/प्रमाण भी दें। साथ ही, यह विश्लेषण करें कि उन सहशैक्षिक पक्षों को आपके विद्यालयी गतिविधियों/शिक्षण के अंतर्गत कितना महत्व दिया जाता है।

उपरोक्त सभी विश्लेषणों के आधार पर उन बच्चों के सहशैक्षिक पक्षों को और निखारने के दृष्टिकोण से प्रशिक्षुगण स्वयं क्या कर सकते हैं, उसकी योजना बनाएं तथा उसका क्रियांन्वयन करें। अंत में इन सभी कार्यों को लेकर एक रिपोर्ट तैयार करें तथा अपने प्रशिक्षण केन्द्र पर जमा करें। पूरे कार्य को करने के दौरान आप अपने साधनसेवियों, विशेषकर अपने मेंटर से अवश्य सुझाव लेते रहें।

## 4. सामुदायिक कार्य

शिक्षक का सम्बंध केवल विद्यालय के साथ ही नहीं, बल्कि समुदाय के साथ भी होना उतना ही जरूरी है। अतः विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षुओं को अपने विद्यालय के आस–पास के समुदाय की प्रकृति, उनकी अपेक्षाएं, चुनौतियां, आदि को समझने तथा उनके बेहतरी के लिए कुछ सामुदायिक सेवा कार्यों को करना होगा। यह इसलिए भी आवश्यक है ताकि हर प्रशिक्षु अपने विद्यालय के आस–पास के समुदाय को समझे तथा उसके प्रति संवेदनशील बने। इसके अंतर्गत यह अपेक्षा है कि हर प्रशिक्षु अपने विद्यालय के आस–पास के समुदाय में कोई वैसा सामाजिक कार्य करे जिसकी जरूरत वहां हो। इस कार्य को प्रशिक्षु अपने विद्यालय के अन्य शिक्षकों तथा बच्चों के साथ सामुहिक रूप से कर सकते हैं। प्रशिक्षण केन्द्र के कुछ प्रशिक्षु आपस में मिलकर भी कोई सामुदायिक कार्य कर सकते हैं।

उपरोक्त सामुदायिक कार्य के साथ–साथ प्रशिक्षुओं से व्यक्तिगत तौर पर यह अपेक्षा है कि वे अपने घर के आस–पड़ोस के किसी एक परिवार का चयन कर उसके शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण करें। यह जानने–समझने की कोशिश करें कि उस परिवार में किस तरह की शिक्षा की आकांक्षाएं हैं, परिवार के सदस्यों ने कहां तक की औपचारिक शिक्षा प्राप्त की है, शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्होंने किस तरह की चुनौतियों का सामना किया है आदि। उस परिवार में शिक्षा की जो स्थिति है, उसके पीछे के कारणों का विश्लेषण करें। अपने विश्लेषण के आधार पर आप उस परिवार के आगामी शैक्षिक विकास के लिए कुछ सुझाव भी प्रस्तुत करें।

उपरोक्त दोनों कार्यों को करने से पूर्व यह अपेक्षा है कि प्रशिक्षुगण इसकी चर्चा अपने साधनसेवी से जरूर कर लें।

**कालावधि :** विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के अंतर्गत सोलह सप्ताह में से दो सप्ताह सामुदायिक कार्य के लिए है। चतुर्थ सत्र के किसी भी दो सप्ताह में यह कार्य प्रशिक्षुओं द्वारा किया जाए तथा चतुर्थ सत्र के अंत में इसकी एक रिपोर्ट प्रशिक्षु द्वारा प्रशिक्षण केन्द्र पर जमा की जाएगी। रिपोर्ट में प्रशिक्षु इस बात को विशेष तौर पर लिखें कि उनके द्वारा किए गए सामुदायिक कार्य के कारण समुदाय पर क्या प्रभाव पड़ा या पड़ने का अनुमान है। इसी रिपोर्ट के दूसरे भाग में वे अपने द्वारा किए गए किसी परिवार के शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण भी प्रस्तुत करें।